RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 25 जुलाई 2019/ पोस्टिंग तिथि 29 जुलाई

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका अगस्त 2019

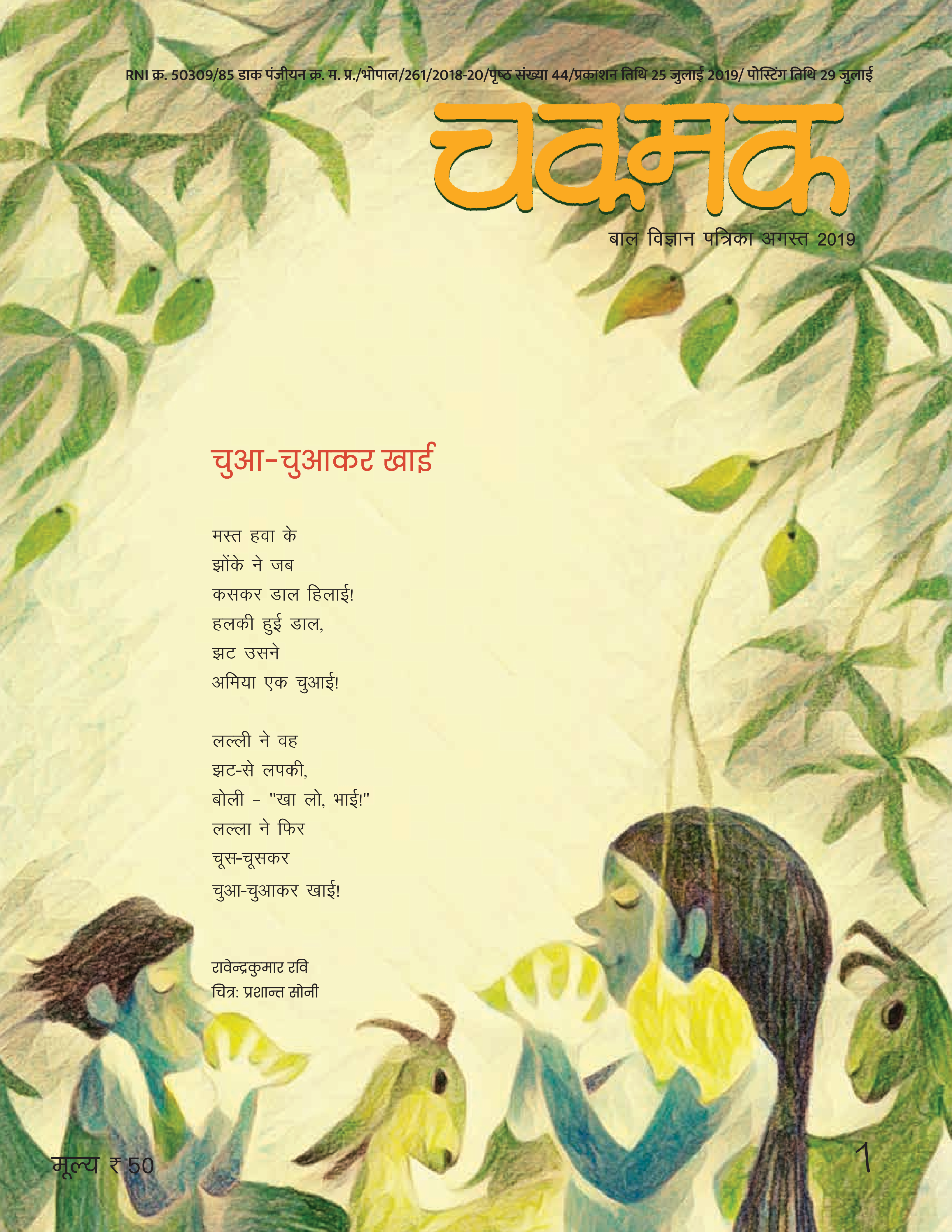

चुआ-चुआकर खाई

मस्त हवा के
झोंके ने जब
कसकर डाल हिलाई!
हलकी हुई डाल,
झट उसने
अमिया एक चुआई!

लल्ली ने वह
झट-से लपकी,
बोली - "खा लो, भाई!"
लल्ला ने फिर
चूस-चूसकर
चुआ-चुआकर खाई!

रावेन्द्रकुमार रवि
चित्र: प्रशान्त सोनी

मूल्य ₹ 50

कैमरा ट्रैप वन्यजीव संरक्षण में बहुत ही उपयोगी रहे हैं। वैसे तो इन्हें शिकार के लिए बनाया गया था, लेकिन अब ये वन्यजीवों के बारे में जानने की पुरानी तकनीकों की जगह इस्तेमाल हो रहे हैं। जानवरों को पकड़कर उनके बारे में जानकारी हासिल करने के बजाय इन कैमरों के इस्तेमाल का फायदा तो ज़ाहिर है। इनका लगातार इस्तेमाल हो सकता है, ये वन्यजीव को परेशान किए बिना काम करते हैं और इनसे मिली जानकारी काफी सटीक होती है। इन कैमरों की बदौलत हमें उन जानवरों की उपस्थिति का पता चला जिनके होने की हमें खबर तक नहीं थी। साथ ही जानवरों की उन किस्मों के बारे में भी पता चला जिन्हें हम विलुप्त मानते थे। बाघ जैसे कुछ किस्म के जानवर कैमरे के फ्लैश से डर जाते हैं, यहाँ तक कि कैमरे को तोड़ भी देते हैं। लेकिन आजकल इन्फ्रारेड रोशनी का सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया जा रहा है। पक्षियों और स्तनधारी जानवरों को इसका पता तक नहीं चलता है।

पकड़ा गया बाघ!

रोहन चक्रवर्ती

अंक 395 अगस्त 2019

चकमक

इस बार

चुआ-चुआकर खाई - रावेन्द्रकुमार रवि 1

पकड़ा गया बाघ! - रोहन चक्रवर्ती 2

गोपी गवैया बाघा बजैया - उपेन्द्रकिशोर रायचौधरी 4

खुशियों का शहर माण्डू - दिलीप चिंचालकर 8

गणित है मज़ेदार 12

तुम भी बनाओ - मॉन्स्टर बुकमार्क 14

किट्टू उड़नछू! - हर्षिका उदासी 15

क्यों-क्यों? 18

बगीचा-ए-रसोई - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन 22

सवाल के बवाल - हर्षवर्धन कुमार 24

भारतीय सेना के साथ पाँच दिन - रितिका गौर 25

कुछ लोगों को मच्छर ज़्यादा क्यों काटते हैं? 28

बटरफ्लाई - बाणीप्रसन्न 29

तुम भी जानो 30

विस्थापन से प्रभावित समुदाय व बच्चे - रुबीना खान 31

मेरा पन्ना 34

मेमना की होली - शीतल कुमारी 39

भूल-भुलैया 40

माथापच्ची 41

चित्रपहेली 43

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर

सम्पादकीय सहयोग
भरत त्रिपाठी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य

एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026, फोन: +91 755 2977770 से 3 तक
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

भाग - 6

गोपी गवैया बाघा बजैया

उपेन्द्रकिशोर रायचौधरी
अनुवाद: लाल्टू
चित्र: शिवात्मिका लाला

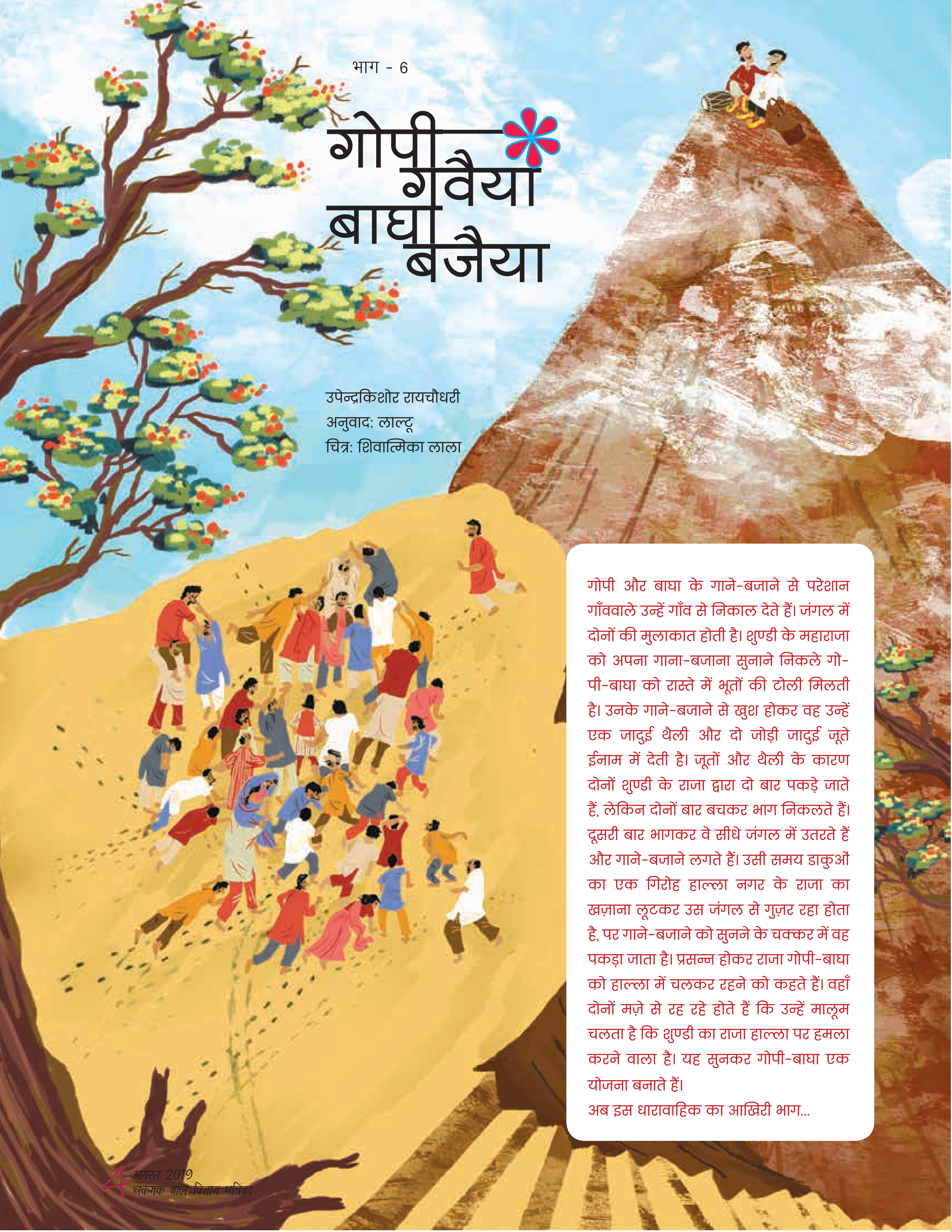

गोपी और बाघा के गाने-बजाने से परेशान गाँववाले उन्हें गाँव से निकाल देते हैं। जंगल में दोनों की मुलाकात होती है। शुण्डी के महाराजा को अपना गाना-बजाना सुनाने निकले गोपी-बाघा को रास्ते में भूतों की टोली मिलती है। उनके गाने-बजाने से खुश होकर वह उन्हें एक जादुई थैली और दो जोड़ी जादुई जूते ईनाम में देती है। जूतों और थैली के कारण दोनों शुण्डी के राजा द्वारा दो बार पकड़े जाते हैं, लेकिन दोनों बार बचकर भाग निकलते हैं। दूसरी बार भागकर वे सीधे जंगल में उतरते हैं और गाने-बजाने लगते हैं। उसी समय डाकुओं का एक गिरोह हाल्ला नगर के राजा का ख़ज़ाना लूटकर उस जंगल से गुज़र रहा होता है, पर गाने-बजाने को सुनने के चक्कर में वह पकड़ा जाता है। प्रसन्न होकर राजा गोपी-बाघा को हाल्ला में चलकर रहने को कहते हैं। वहाँ दोनों मज़े से रह रहे होते हैं कि उन्हें मालूम चलता है कि शुण्डी का राजा हाल्ला पर हमला करने वाला है। यह सुनकर गोपी-बाघा एक योजना बनाते हैं।

अब इस धारावाहिक का आखिरी भाग...

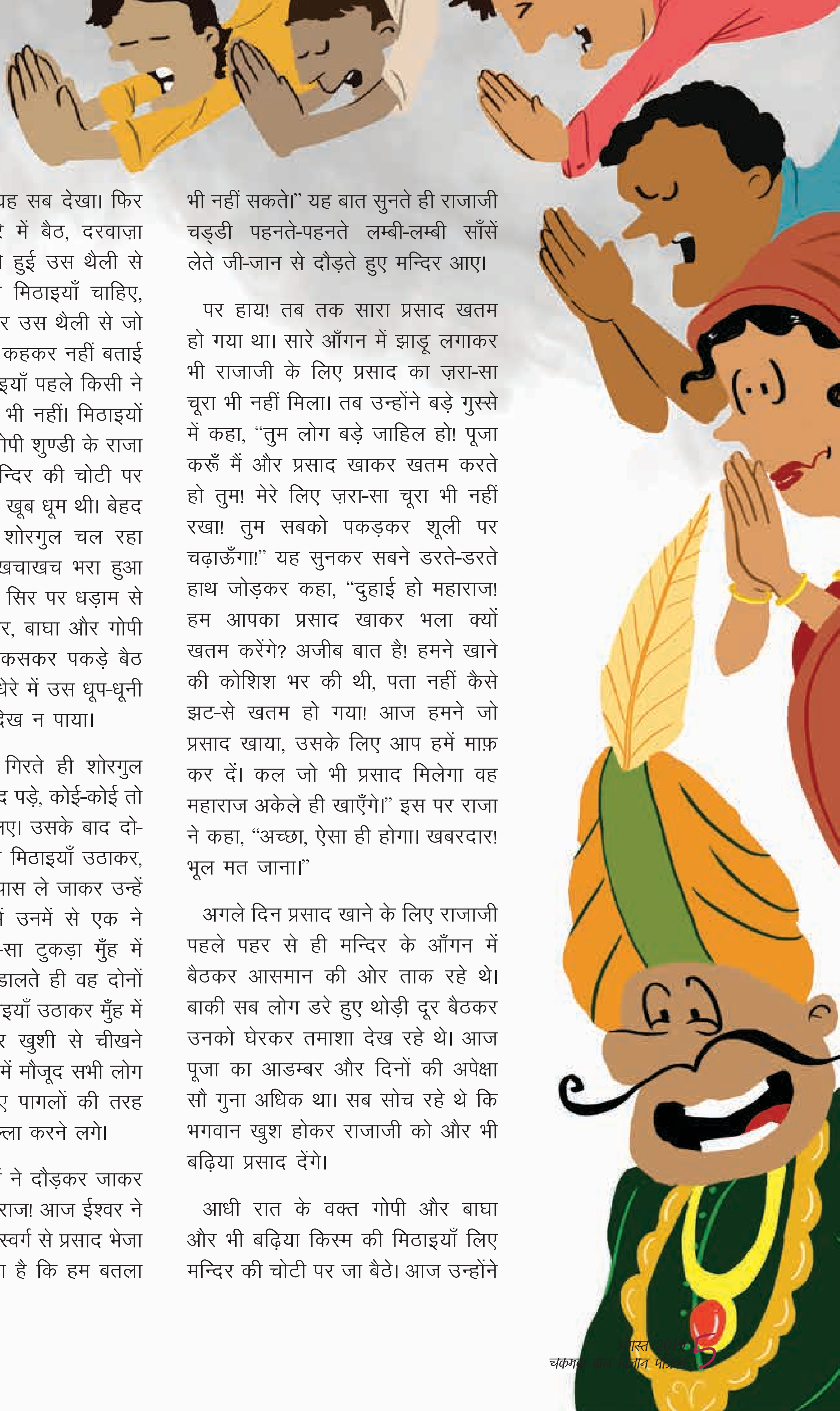

गोपी और बाघा ने यह सब देखा। फिर एक दिन अपने कमरे में बैठ, दरवाज़ा बन्द कर, भूतों की दी हुई उस थैली से कहा, “नए किस्म की मिठाइयाँ चाहिए, खूब स्वादिष्ट।” इस पर उस थैली से जो मिठाइयाँ निकलीं, वह कहकर नहीं बताई जा सकतीं। ऐसी मिठाइयाँ पहले किसी ने कभी नहीं खाईं, देखीं भी नहीं। मिठाइयों को लेकर बाघा और गोपी शुण्डी के राजा के देवालय के बड़े मन्दिर की चोटी पर जा बैठे। नीचे पूजा की खूब धूम थी। बेहद धूप-धूनी, शंख-घण्टी, शोरगुल चल रहा था। आँगन लोगों से खचाखच भरा हुआ था। उन सब लोगों के सिर पर धड़ाम से सारी मिठाइयाँ डालकर, बाघा और गोपी मन्दिर की चोटी को कसकर पकड़े बैठ तमाशा देखने लगे। अँधेरे में उस धूप-धूनी के धुँए में कोई उन्हें देख न पाया।

मिठाइयाँ आँगन में गिरते ही शोरगुल रुक गया। कई लोग कूद पड़े, कोई-कोई तो चीखते हुए दौड़ भी लिए। उसके बाद दो-चार हिम्मती लोग कुछ मिठाइयाँ उठाकर, डरते-डरते रोशनी के पास ले जाकर उन्हें देखने लगे। आखिर में उनमें से एक ने आँखें बन्द कर थोड़ा-सा टुकड़ा मुँह में डाला। फिर क्या था, डालते ही वह दोनों हाथों से आँगन से मिठाइयाँ उठाकर मुँह में डाल नाचने लगा और खुशी से चीखने लगा। फिर उस आँगन में मौजूद सभी लोग मिठाइयाँ खाने के लिए पागलों की तरह छीना-झपटी कर हो-हल्ला करने लगे।

इसी बीच कुछ लोगों ने दौड़कर जाकर राजाजी से कहा, “महाराज! आज ईश्वर ने पूजा से सन्तुष्ट होकर स्वर्ग से प्रसाद भेजा है। प्रसाद इतना बढ़िया है कि हम बतला भी नहीं सकते।” यह बात सुनते ही राजाजी चड्डी पहनते-पहनते लम्बी-लम्बी साँसें लेते जी-जान से दौड़ते हुए मन्दिर आए।

पर हाय! तब तक सारा प्रसाद खतम हो गया था। सारे आँगन में झाड़ू लगाकर भी राजाजी के लिए प्रसाद का ज़रा-सा चूरा भी नहीं मिला। तब उन्होंने बड़े गुस्से में कहा, “तुम लोग बड़े जाहिल हो! पूजा करूँ मैं और प्रसाद खाकर खतम करते हो तुम! मेरे लिए ज़रा-सा चूरा भी नहीं रखा! तुम सबको पकड़कर शूली पर चढ़ाऊँगा!” यह सुनकर सबने डरते-डरते हाथ जोड़कर कहा, “दुहाई हो महाराज! हम आपका प्रसाद खाकर भला क्यों खतम करेंगे? अजीब बात है! हमने खाने की कोशिश भर की थी, पता नहीं कैसे झट-से खतम हो गया! आज हमने जो प्रसाद खाया, उसके लिए आप हमें माफ़ कर दें। कल जो भी प्रसाद मिलेगा वह महाराज अकेले ही खाएँगे।” इस पर राजा ने कहा, “अच्छा, ऐसा ही होगा। खबरदार! भूल मत जाना।”

अगले दिन प्रसाद खाने के लिए राजाजी पहले पहर से ही मन्दिर के आँगन में बैठकर आसमान की ओर ताक रहे थे। बाकी सब लोग डरे हुए थोड़ी दूर बैठकर उनको घेरकर तमाशा देख रहे थे। आज पूजा का आडम्बर और दिनों की अपेक्षा सौ गुना अधिक था। सब सोच रहे थे कि भगवान खुश होकर राजाजी को और भी बढ़िया प्रसाद देंगे।

आधी रात के वक्त गोपी और बाघा और भी बढ़िया किस्म की मिठाइयाँ लिए मन्दिर की चोटी पर जा बैठे। आज उन्होंने

और भी बढ़िया कपड़े पहन रखे थे - सिर पर मुकुट, गले में हार, हाथों में कड़े, कानों में कुण्डल; वे देवता बनकर आए थे।

धुएँ की वजह से कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था, फिर भी राजाजी आसमान की ओर ताक लगाए बैठे थे। इसी वक्त गोपी और बाघा ने हँसते-हँसते उनके ऊपर उन मिठाइयों को फेंक दिया। पहले तो राजाजी चीखकर तीन हाथ ऊँचाई तक कूद पड़े, फिर जल्दी ही सँभलकर वे दोनों हाथों से मिठाइयाँ मुँह में डालने लगे, फिर झूम-झूमकर कैसा नाच उन्होंने नाचा, वाह!

ठीक उसी वक्त गोपी और बाघा अचानक मन्दिर के शिखर से उतरकर राजा के पास आ खड़े हुए। उनको देखकर सब 'भगवान आए' कहकर कौन पहले प्रणाम करे, यह तय नहीं कर पा रहे थे। राजाजी तो लम्बे होकर ज़मीं पर लेट ही गए और केवल सिर ठोकते जा रहे थे। गोपी ने उनसे कहा, "महाराज! तुम्हारा नाच देखकर हम सन्तुष्ट हुए हैं; आओ अब ज़रा गले मिल लें।" राजा ने यह सुना क्या, उन्हें तो जैसे हाथों में स्वर्ग मिल गया। देवता के साथ गले मिलना, यह कोई कम सौभाग्य की बात न थी!

गले मिलना शुरू हुआ। सभी लोग 'जय हो, जय हो' कहकर चीखने लगे। तभी मौका पाकर गोपी और बाघा ने राजाजी को अच्छी तरह बाँहों में जकड़कर कहा, "तो अब अपने कमरे में चलें!" ऐसा कहते ही वे लोग उनको अपने साथ लिए अपने कमरे में आ पहुँचे। मन्दिर के आँगन में लोग काफी देर तक मुँह खोले आकाश की ओर ताकते रहे। इसके बाद राजाजी दोबारा लौटकर नहीं आए, वे लोग भी अपने-अपने घर लौट गए और बोले, "कितने आश्चर्य की बात देखी! राजाजी ज़िन्दा स्वर्ग चले गए! देवता लोग खुद उन्हें लेने आए थे!"

इधर राजाजी गोपी और बाघा की गोद में बेहोश पड़े हुए थे। अपने कमरे में आकर भी बहुत देर तक उनको होश नहीं आया। जब भोर हुई तो उनकी आँखें खुलीं, और उन्होंने देखा कि वे दो भूत उनके सिर पर बैठे हुए हैं। वे झट-से उनके पैरों पर गिर पड़े और काँपते-काँपते बोले, “तुमसे प्रार्थना करता हूँ! मुझे मत खाना। मैं दो सौ भैंसें बलि चढ़ाकर तुम्हारी पूजा करूँगा।”

गोपी बोला, “महाराज, डरने की कोई बात नहीं है। हम भूत नहीं हैं, आपको खाने की भी हमारी कोई मंशा नहीं है।” राजाजी को इस पर ज़रा भी भरोसा नहीं हुआ। वे और कुछ न कहकर सिर छिपाकर काँपने लगे।

इधर बाघा ने आकर हाल्ला के राजा से कहा, “कल रात हम लोग शुण्डी के राजा को पकड़ लाए हैं। अब आपका क्या आदेश है?" हाल्ला के राजा बोले, “उन्हें ले आओ!”

जब दोनों राजाओं की मुलाकात हुई तो शुण्डी के राजा को पता चला कि उनको पकड़कर लाया गया है। हाल्ला को जीतना तो उनकी किस्मत में रहा ही नहीं, अब जान पर भी बन आई है। पर हाल्ला के राजा ने उनको जान से नहीं मारा, सिर्फ उनका राज्य छीन लिया। इसके बाद राजा ने गोपी और बाघा से कहा, “तुम्हीं लोगों ने मुझे बचाया है, नहीं तो मेरा राज्य भी जाता और जान भी। मैं तुम्हारा क्या भला कर सकता हूँ? शुण्डी का आधा राज्य तुम्हें दे रहा हूँ और अपनी दो बेटियों की शादी तुम्हारे साथ करना चाहता हूँ।”

फिर खूब धूम मची। गोपी और बाघा हाल्ला के राजा के दामाद होकर और शुण्डी का आधा राज्य पाकर परम आनन्द के साथ संगीत-चर्चा करते रहे। तब गोपी के माँ-बाप जैसा सुख और किसे मिल सकता था?

चलते-चलते...

तो कैसी लगी गोपी गवैया और बाघा बजैया की कहानी? पुराने ढंग की - सो तो होगी ही, आखिर सौ साल पुरानी है। पर इस कहानी में कुछ ऐसी बातें हैं जो आज भी हमें सोचने को मजबूर करती हैं। कहानी में दो राज्यों के नाम आते हैं - एक हाल्ला और दूसरा शुण्डी। हाल्ला के राजा भले आदमी है, उनके वहाँ गोपी और बाघा चैन से बस गए थे। पर शुण्डी का राजा लोभी है और उसे अपना राज्य और सम्पत्ति बढ़ाने का लालच है। लालची राजा ने हाल्ला राज्य पर हमला करने की ठान ली। वह तो अच्छा हुआ कि गोपी और बाघा के पास भूतों से मिली जादुई ताकत थी, इसलिए जंग शुरू होने के पहले ही उसे बन्दी बना लिया गया। पर अगर वे न होते तो क्या होता? जंग होती, बहुत सारे सिपाही मारे जाते, जो भी जीतता उसके सिपाही लूटमार करते और इससे आम लोगों को बहुत तकलीफें झेलनी पड़तीं। आज भी ऐसा होता है, दुनिया भर में कई जगह जंगें चल रही हैं। अगर हम गहराई में जाकर समझें तो पाएँगे कि इन जंगों के पीछे का कारण आम लोगों की दुश्मनी नहीं, बल्कि हाकिम-हुक्काम यानी जो लोग सरकारें चला रहे होते हैं, उनका लालच ही होता है। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को ही लो, इन दोनों मुल्कों में बचपन से हर किसी के दिमाग में परस्पर दुश्मनी का ज़हर डाल दिया जाता है। असल में दोनों देशों में आम लोगों के बीच कोई दुश्मनी नहीं है, वे सब प्यार-मोहब्बत के साथ रहना चाहते हैं। हर कोई चाहता है कि खुशहाली हो, बच्चों को अच्छी तालीम मिले, बीमार लोगों को सेहत की सुविधाएँ मिलें। आखिर फौज में भर्ती हो रहे सिपाही भी तो घर-परिवार चलाने के लिए ही नौकरी करते हैं। जब कोई सिपाही मर जाता है, सोचो कि उसके परिवार पर क्या गुज़रती है। बच्चे अनाथ हो जाते हैं। दोनों ओर की जनता आपसी नफरत में उलझी रहती है। और दोनों देश विदेशी बम-औज़ार बेचने वालों से हजारों-करोड़ों रुपए खर्च कर अस्त्र खरीदते हैं। इन दिनों भारत दुनिया में सबसे बड़ा अस्त्र खरीदने वाला देश है। इससे तंग आकर अमन-पसन्द लोग सोचते हैं कि काश हम सब यह समझ लेते कि ‘जंग तो खुद ही एक मसला है, वह क्या मसलों का हल देगी’ (यह लाइन प्रसिद्ध शायर साहिर लुधियानवी ने अपनी एक कविता में लिखी थी)। गोपी गवैया और बाघा बजैया की कहानी में जैसे जादू के वर भूतों ने दिए, वैसा ही अगर हम-तुम भी कर पाते, तो कितना बढ़िया होता।

- लाल्टू

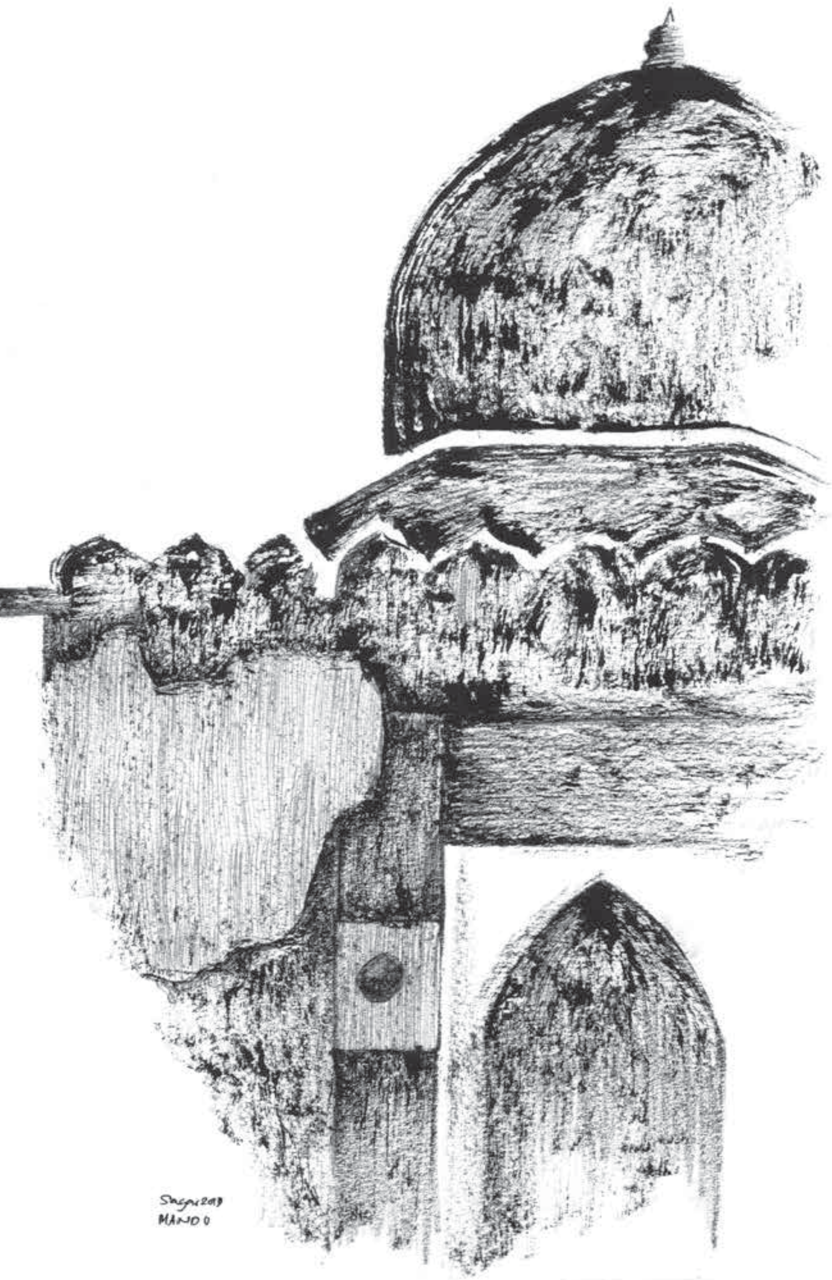

चित्र: सागर अरणकल्ले

दिलीप चिंचालकर

फोटोग्राफ : लोकेश मालती प्रकाश

खुशियों का शहर माण्डू

मालवा और निमाड़ में पास-पास दो ज्योतिर्लिंग मौजूद हैं – एक उज्जैन में और दूसरा ओंकारेश्वर में। इन दोनों के ठीक बीचों-बीच है खुशियों वाली यह जगह – माण्डव गढ़ या माण्डू। दरअसल मालवा की राजधानी रह चुके माण्डू को पहले ‘शादियाबाद’ नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ है ‘खुशियों का शहर’। यह बहुत ही आकर्षक जगह है, बारिश के मौसम में तो और भी ज़्यादा। यह समुद्र सतह से बारह सौ फीट की ऊँचाई पर है। यहाँ आम, इमली, बरगद, खिरनी, सीताफल के अलावा खुरासानी इमली के पेड़ लगते हैं। खुरासानी इमली या बाओबाब बड़ा अनोखा पेड़ है। इसका तना 30 फीट व्यास का और उम्र में पाँच हज़ार वर्ष से अधिक हो सकता है। इसे मुहम्मद खिलजी ने अफ्रीका से मँगवाकर माण्डू में रोपा था। अफ्रीकी व्यापारियों के साथ उसके कारोबारी सम्बन्ध थे।

माण्डू के तीनों ओर गहरी काकड़ खोह है जो इसे निमाड़ प्रान्त से अलग करती है। आसपास घने जंगल थे जिनमें अभी एक सौ वर्षों पहले तक दूसरे वन्य प्राणियों के साथ बाघ भी घूमते थे।

माण्डू के कोई हज़ार वर्ष के इतिहास में सुल्तान बाज बहादुर और उसकी बेगम रूपमती के लिए इसे जाना जाता है। माण्डू के इतिहास में यह बात भी खास है कि यहाँ लगभग सभी मुगल बादशाह दस्तक दे गए।

माण्डू में मुस्लिम सल्तनत की शुरुआत

तरह-तरह के राजपाटों से भरा माण्डू का हज़ार से ज़्यादा वर्षों का इतिहास पन्द्रहवीं सदी के मुहाने पर आ टिकता है। जब 1398 में तैमूर लंग ने दिल्ली पर आक्रमण किया, उसी समय से माण्डू का सिलसिलेवार इतिहास शुरू होता है। दिल्ली में चल रही अराजकता का फायदा लेते हुए पहले सुल्तान दिलावर खान और फिर उसका बेटा अल्प खान माण्डू पर काबिज होते हैं। अल्प खान ने अपना नाम बदल कर होशंगशाह कर लिया और 1405 में एक उम्दा मुस्लिम सल्तनत की शुरुआत की।

एक कहानी है कि शाह ने ओड़िशा के राजा से उसके सबसे उम्दा हाथी की माँग की। हज़ार मील दूर का राजा यह बात यों ही कैसे मान लेता, उसने मना कर दिया। तब

होशंगशाह एक व्यापारी का भेष धर अपने सैनिकों के साथ महीने भर की यात्रा कर ओड़िशा जा पहुँचा। ऐन वक्त पर बारिश आ जाने से भेद खुल गया और शाह और उसकी पलटन को भागना पड़ा। भागते हुए उसने ओड़िशा के राजा को अगुआ कर लिया और अपने राज्य की हद तक ले आया। राजा की रिहाई के बदले में उसने न केवल अपनी पसन्द का हाथी रखवा लिया, बल्कि साथ में 75 हाथी और छुड़ा लिए।

अपनी तलवार भांजकर आसपास का काफी इलाका जीतने के बावजूद शाह को एक नर्मदिल शासक माना जाता था। उनकी कब्र पर छत से टपकते वर्षा-जल को शायद इसीलिए प्रकृति के शाह की मौत पर बहाए आँसू समझा जाता था। और अभी-अभी तक उनकी मज़ार पर उर्स मनाया जाता था। कहते हैं होशंगशाह के मकबरे का वास्तु शाहजहाँ को खास पसन्द आया था। उसने अपने विशेष कारीगर मकबरे की वास्तु का डिज़ाइन देखने के लिए माण्डू भेजे थे। इन कारीगरों के नाम-हस्ताक्षर मकबरे के दरवाज़े की चौखट पर सीधे हाथ की फ्रेम पर खुदे हैं।

मुगल बादशाहों का माण्डू आगमन

हुमायूँ माण्डू आने वाला पहला मुगल बादशाह था। शेर शाह सूरी से युद्ध के दौरान उत्तर में भागने से पहले हुमायूँ ने माण्डू में कुछ शान्तिपूर्ण दिन बिताए। मगर अकबर यहाँ चार या अधिक बार आया। पहली बार सन 1573 में अपने सेनापति आदम खान को अनुशासित करने के लिए। दूसरी बार 1592 में जब उसने अपने बेटे मुराद खान को शासक नियुक्त किया। और दो अन्य बार दक्षिण के दौरे पर जाते हुए। नीलकण्ठ महादेव पर इस काम की जानकारी देने वाली अकबर के नाम की तख्तियाँ लगी हैं। ऐसी ही तख्तियाँ तारापोर दरवाज़े और महमूद खिलजी के मकबरे पर भी लगी हैं।

माण्डू का सबसे ज़्यादा आनन्द शायद जहाँगीर ने उठाया। वह यहाँ मार्च से अक्टूबर छह महीने तक टिका। बारिश के मौसम में यहाँ रहते हुए उसने डायरी भी लिखी। उसमें यहाँ की वर्षा ऋतु का लुभावना वर्णन है। कैसे बादल ज़मीन (पठार) पर आ जाते हैं, चारों और तलैया भर जाती हैं और उनमें कमल खिलने लगते हैं। जहाँगीर के रिहायशी कमरे की खिड़की के बाहर ही एक वैगटेल (धोबन) पक्षी ने घोंसला बनाया था। उसके अण्डे देने और चूजे निकलने का भी सविस्तार वर्णन मिलता है।

जहाँगीर की डायरी में दर्ज है कि उसके जन्मदिन की दावत में मेहमानों ने खूब खाया-पिया। देर रात जब जहाँगीर ने शिकार का न्योता दिया तो सब सरदार पीछे हट गए। सिर्फ उसकी बेगम नूरजहाँ बन्दूक उठाकर सामने आई। उस रात नूरजहाँ ने छह गोलियों से चार बाघ मार गिराए। बादशाह ने खुश होकर बेगम को अपना रत्नजटित कड़ा पहना दिया जिसकी कीमत दो लाख अशर्फियाँ थीं। साथ ही बेगम पर एक हज़ार

अशर्फियाँ भी न्योछावर कीं। बादशाह ने उस रात कई बार अपनी 'तुला' करवाई। रत्न, आभूषण, महँगे वस्त्र और मेवे सरदारों और मेहमानों पर लुटाए। यह देख अंग्रेज़ दूत सर टॉमस रो को कुछ अच्छा नहीं लगा तो बादशाह ने एक तुला की सामग्री से उसे भी नहला दिया। जलसे के मेहमानों में शहज़ादा खुर्रम भी था जिसने बादशाह को एक हीरा भेंट किया। खुर्रम उर्फ़ शाहजहाँ दूसरी बार 1617 में माण्डू अपने पिता के गुस्से से बचने के लिए आ छुपा था।

औरंगजेब के माण्डू आने का कहीं उल्लेख नहीं है। बस, एक दरवाज़े का नाम उसके नाम पर है – आलमगीर दरवाज़ा।

माण्डू के अन्य महत्वपूर्ण सुल्तान

माण्डू के महत्वपूर्ण सुल्तानों में होशंगशाह के बाद 1436 में गद्दी पर बैठा महमूद खिलजी है जिसने युद्ध कर राज्य तो फैलाया, साथ ही अफ्रीका तक व्यापार किया। मेवाड़ के महमूद खिलजी ने राणा कुम्भा पर जीत की खुशी में अशर्फी महल के ऊपर सात मंज़िला विजय स्तम्भ बनाया, जो उसके जिन्दा रहते-रहते गिरकर बिखर गया। माण्डू के सुल्तानों की वास्तु कला मुगल और अफगान शैली की मिली-जुली पद्धति थी। इसकी विशेषता इसमें शामिल हड़बड़ी थी, जिस वजह से यह जल्दी ही टूट जाती थी। अशर्फी महल में निचली मंज़िल पर एक बड़ा ग्रन्थालय बना था। इसकी अध्ययनशाला में आने वाले मालवा के विद्वान इसकी तुलना शीराज़ और समरकन्द के विद्यापीठों से करते थे। सुल्तान दावा करता था कि वह मनुष्य स्वभाव का गहरा ज्ञाता है। उसने ऐसे दवाखाने खोल रखे थे जहाँ मनुष्यों से लेकर जानवरों तक का इलाज होता था।

1469 में सुल्तान बना गयासुद्दीन बड़ा दयालु शासक था। उसकी सेवा में कोई पन्द्रह हज़ार महिलाएँ थीं। इनके लिए उसने सिलाई-कढ़ाई, बुनाई, सामरिक शिक्षा, घुड़सवारी के प्रशिक्षण की व्यवस्था कर रखी थी। अपने हरम के रहने के लिए उसने जहाज़ महल बनवाया। बारिश में चारों ओर पानी भर जाने पर यह काफी कुछ एक जहाज़-सा आभास देता है। दुखद दास्तान ही थी कि 80 वर्ष की उम्र में सुल्तान के बेटे

ने ही उसे ज़हर देकर मार दिया। सुल्तान ज़हरों का जानकार था और जानता था कि बेटा क्या कर रहा है।

अगले कुछ वर्षों तक आने वाले माण्डू के शासक विशेष उल्लेखनीय नहीं रहे। 1534 में हुमायूँ ने माण्डू फतह किया और 1542 में शेरशाह सूरी ने माण्डू पर चढ़ाई की।

बाज़ बहादुर और माण्डू

1555 में माण्डू की सत्ता सूरी के तीन रिश्तेदारों के हाथ लगी। उनमें से एक मलिक बेयजिद ने बाकी दो का कत्ल कर खुद ताज पहन लिया और नाम धारण किया - बाज़ बहादुर। वह एक बहादुर सैनिक था। मगर रानी दुर्गावती के हाथों उसे ऐसी हार मिली कि वह लड़ाई छोड़ संगीत और कविता में लग गया। लोकप्रिय कथा यह है कि शिकार के वक्त उसे एक जनजातीय लड़की रूपमती से प्रेम हो गया और उसने उससे विवाह कर लिया। रूपमती की शर्त थी कि उसे प्रतिदिन नर्मदा नदी के दर्शन होने चाहिए और उसके जल में स्नान करते आना चाहिए। सुल्तान ने उसकी शर्तें पूरी करते हुए माण्डू के एक छोर पर रूपमती का महल बनाया। यहाँ से अलसुबह धूप में दूर निमाड़ प्रान्त में बहती नर्मदा नदी की पतली चमकदार धार दिखाई दे जाती है। महल से नीचे उतरने के बाद एक कुण्ड है जो नर्मदा-जल से भर जाता है।

सन 1562 में अकबर की सेना लेकर आदम खान ने माण्डू पर आक्रमण किया। इस युद्ध में हार कर बाज़ बहादुर खानदेश भाग गया और रूपमती ने अपना अन्त कर लिया। बाद में वह थोड़े समय के लिए दूसरे राजाओं की मदद से लौटा भी, मगर आखिर उसने अकबर के दरबार में ही शरण ली। यह आदम खां अकबर की दाई माँ माहम अंगा का बेटा था। उसने माण्डू में काफी अत्याचार किए और लूट मचाई। आखिर में उसकी ज़्यादतियों के कारण अकबर ने उसे आगरा महल से नीचे फिंकवा कर प्राणदण्ड दिया।

बाज़ बहादुर के बाद माण्डू का ब्यौरा कुछ खास दिलचस्प नहीं बचता। सन 1732 में पुणे के बाजीराव पेशवा (प्रथम) ने मालवा काबिज किया और माण्डू का मुस्लिम प्रभाव खतम हुआ।

1599 में किसी अहमद उल उमरी तुर्कमान ने रूपमती की कहानी फारसी में लिखी और उसकी 26 कविताओं को संग्रहित किया। एक अंग्रेज़ एल. एम. लुम्प ने कुछ दोहों, कविताओं और सवाईयों का संग्रह प्रकाशित किया – *द लेडी ऑफ द लोटस : रूपमती, क्वीन ऑफ माण्डू; अ स्ट्रेंज टेल ऑफ फेथफुलनेस।*

गणित है मज़ेदार

आलोका कन्हरे
अनुवाद: सजिता नायर

चलो, नीचे दी गई कुछ पहेलियों को देखते हैं:

1. तुम्हारे पास अलग-अलग कीमत के चार डाक टिकट (स्टैम्प) हैं। इन चार स्टैम्प को मिलाकर तुम 1 रुपए से लेकर 15 रुपए तक की डाक भेज सकते हो। बताओ कि इन चारों स्टैम्प की कीमत क्या होगी?

2. 40 किलोग्राम का एक पत्थर चार भागों में टूटा। ये चार भाग कुछ इस तरह से टूटे कि इन भागों का इस्तेमाल करके तुम 1 किलोग्राम से लेकर 40 किलोग्राम तक के वज़न तौल सकते हो। इन चार भागों का वज़न बताओ।

इनके उत्तर निकालने की कोशिश करो।

क्या तुम्हें नीचे दिए गए जवाब मिले?

पहले प्रश्न के चारों स्टैम्प की कीमत होगीं 1, 2, 4 और 8 रुपए। अब इन चारों संख्याओं का इस्तेमाल करो और 1 से 15 तक की सभी संख्याएँ बनाने की कोशिश करो। ध्यान रखना कि किसी एक संख्या को बनाते समय हर स्टैम्प का तुम एक ही बार इस्तेमाल कर सकते हो। जैसे:

₹ 1 ₹ 2 ₹ 4 ₹ 8

1 = 1
2 = 2
3 = 1+2
4 = 4
5 = 4+1
6 = 4+2
7 = 1+2+4... और
15 = 1+2+4+8

दूसरे प्रश्न का उत्तर है 1, 3, 9 और 27। चलो इस उत्तर को भी समझते हैं। एक तराज़ू लो। 1 किलोग्राम तो तुम्हारे पास है। अब 2 किलोग्राम कैसे बनाओगे? इसका तरीका है - तराज़ू में एक तरफ 3 किलोग्राम का पत्थर का टुकड़ा रखो और दूसरे में 1 किलोग्राम का। अब दोनों पलड़ों को बराबर करने के लिए हमें 2 किलोग्राम के पत्थर की ज़रूरत होगी। इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं कि 2 किलोग्राम को तौलने के लिए हम 3 और 1 किलोग्राम के पत्थर के टुकड़े का इस्तेमाल कर सकते हैं।

इसी तरह तुम 40 किलोग्राम तक का वज़न तौल सकते हो।

4 किलोग्राम - 3 और 1 किलोग्राम, दोनों एक तरफ।

दोनों पलड़ों को बराबर करने के लिए 4 किलोग्राम की ज़रूरत पड़ेगी।

5 किलोग्राम - 9 एक तरफ और 3 व 1 किलोग्राम एक तरफ।

दोनों को बराबर करने के लिए 5 किलोग्राम की ज़रूरत पड़ेगी।

6 किलोग्राम के लिए - 9 एक पलड़े में और 3 दूसरे में।

दोनों को बराबर करने के लिए 6 किलोग्राम की ज़रूरत पड़ेगी।

हम इस बात को ऐसे भी कह सकते हैं कि दोनों पलड़ों मे रखे गए पत्थरों का अन्तर, या पलड़ों में रखे गए कुल वज़न के घटाव से हमें जवाब मिल सकते हैं।

इन उत्तरों के बारे में एक और मज़ेदार बात है। दोनों उत्तरों को ज़रा दुबारा देखो:

1, 2, 4, 8

1, 3, 9, 27

क्या तुम्हें इसमें कुछ पैटर्न दिख रहा है?

$2^0=1$

$2^1=2$

$2^2= 2x2 =4$

$2^3= 2x2x2=8$

$3^0=1$

$3^1=3$

$3^2=3x3=9$

$3^3=3x3x3=27$

तुम देख सकते हो कि दोनों ही उत्तरों में संख्या की घात (पावर) का इस्तेमाल किया गया है। पहले में 2 की और दूसरे में 3 की।

अब सवाल उठता है कि 2 और 3 ही क्यूँ आया? वह इसलिए कि हर स्टैम्प के लिए हमारे पास सिर्फ दो विकल्प हैं। या तो हम स्टैम्प का इस्तेमाल करें, या इस्तेमाल न करें। ऐसा इसलिए क्योंकि एक कीमत के स्टैम्प का इस्तेमाल हम एक ही बार कर सकते हैं। लेकिन दूसरे प्रश्न में हमारे पास तीन विकल्प हैं। एक हम उसे तराज़ू के बाएँ पलड़े में रखें, दो हम उसे दाएँ पलड़े में रखें और तीसरा उसका इस्तेमाल ही न करें।

अन्त में एक और बात। जिस तरह 1, 2, 4, और 8 के साथ हम 1 से 15 तक के सारे अंक बना पाए, उसी तरह 2 की घात के इस्तेमाल से हम किसी भी प्राकृत संख्या को लिख सकते हैं। और जैसे 1, 3, 9 और 27 के साथ हम 1 से 40 तक की संख्याएँ बना पाए, वैसे ही 3 की घात का इस्तेमाल कर किसी भी प्राकृत संख्या को लिख सकते हैं। बस यह ध्यान रखना होगा कि एक घात का इस्तेमाल हम केवल एक बार ही करेंगे। उदाहरण के लिए:

$17 = 2^4 + 2^0$

$= 16 + 1$

$17 = 3^3 - 3^2 - 3^0$

$= 27 - 9 - 1$

नीचे दी गई संख्याओं को इस तरह से लिखने की कोशिश करो। जवाब तुम्हें पृष्ठ 43 पर मिलेंगे।

1. 55
2. 78

ओरिगामी- मॉन्स्टर बुकमार्क

जुगाड़ - चौकोर कागज़, कैंची, फेविकोल और स्केच पेन

1. एक चौकोर कागज़ लो।
2. उसे त्रिकोण आकार में आधा मोड़ो।
3. बाएँ कोने को त्रिकोण के ऊपरी कोने की ओर मोड़ो।
4. दाएँ कोने को भी ऊपर की ओर मोड़ो।
5. दोनों मोड़ों को खोल लो। तुम्हें चित्र में दिखाए हुए तरीके से खिंची लकीरें दिखेंगी।
6. ऊपरी भाग के बाहरी कोने को निचले भाग की तरफ कुछ इस तरह मोड़ो कि दोनों के बीच की लकीर बराबर में हों। तुम्हें एक छोटा उलटा त्रिकोण दिखेगा।
7. अब बाएँ कोने को ऊपर के कोने से मिलाते हुए मोड़ो। तुम्हें अन्दर एक पॉकेट-सा बना हुआ दिख रहा होगा, बाएँ कोने को इसके अन्दर मोड़ दो।
8. यही प्रक्रिया दाएँ कोने में भी दोहराओ। बन गया तुम्हारा बुकमार्क। अब इसमें तुम आँख, नाक और कान बनाकर कहानी या कॉमिक का जो पात्र बनाना चाहो, बना सकते हो।

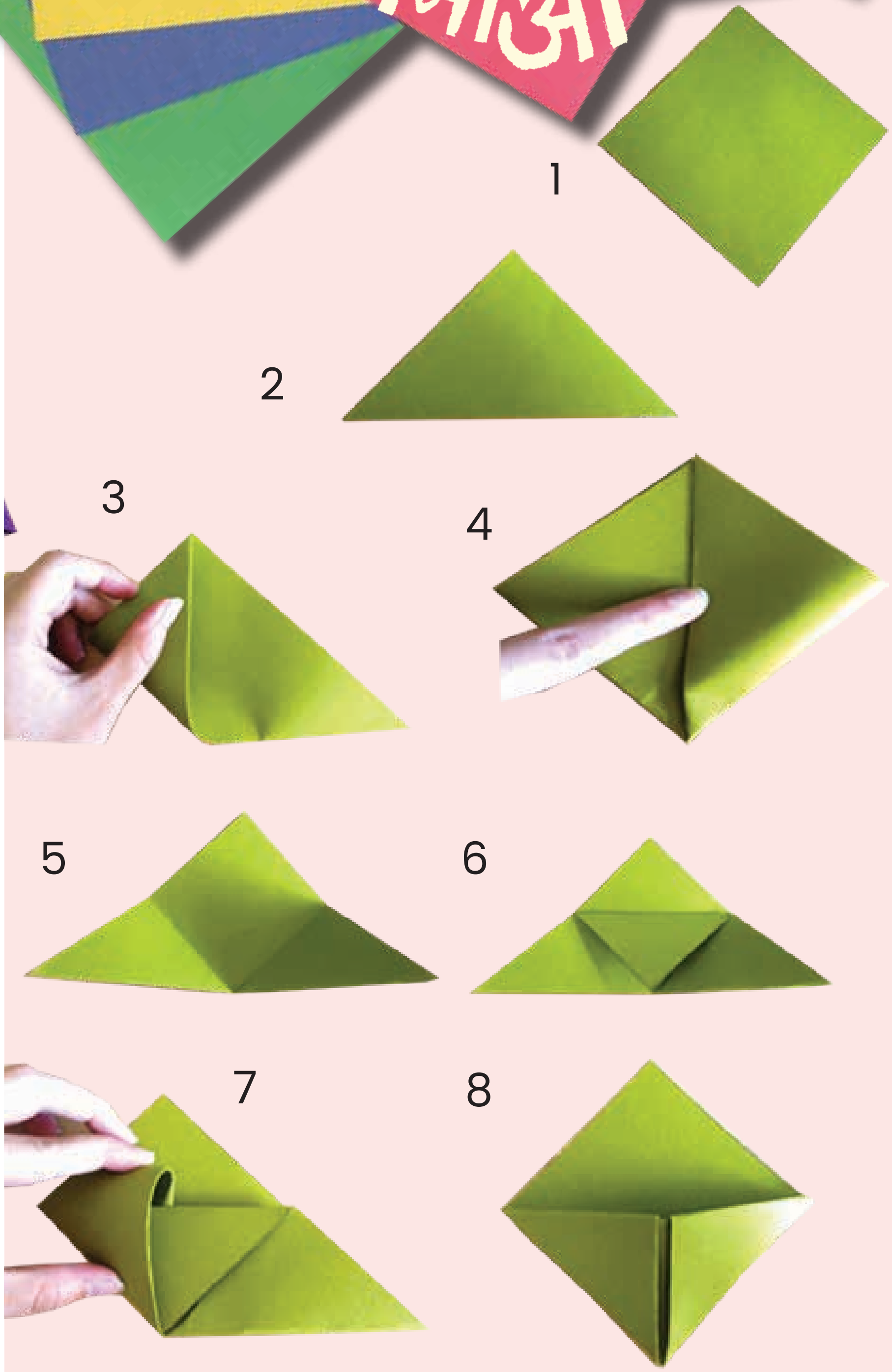

तलाश

हर्षिका उदासी
अंग्रेज़ी से अनुवाद: भरत त्रिपाठी
चित्र: लावण्या नायडू

यह हर्षिका उदासी की अंग्रेज़ी किताब *Kittu's Very Mad Day* का हिन्दी अनुवाद है।

अब तक तुमने पढ़ा :

माधव नाम का आइसक्रीम वाला किट्टू को अपना ग्राहक समझकर आइसक्रीम के लिए पूछता है। बातूनी किट्टू आइसक्रीम खा लेता है और पैसे भी नहीं देता। लेकिन जब किट्टू उसे बताता है कि उसका एक पैर नहीं है और वह खो गया है, तो माधव अपनी साइकिल पर लादकर उसे अपने साथ ले जाता है। किट्टू के पिता हीरे के व्यापारी हैं। काम के सिलसिले में उन्हें पन्ना जाता होता है। इसी बहाने चौदह लोगों का उनका परिवार भी सैर के लिए उनके साथ हो लेता है। मुम्बई लौटते समय एक ढाबे पर किट्टू छूट जाता है। अपने अजीबोगरीब परिवार से अलग होकर उसे मज़ा आ रहा होता है। पर जब माधव कहता है कि वह उसे पुलिस स्टेशन ले जा रहा है तो किट्टू माधव को अपने पिता के डॉन होने की ऐसी कहानी सुनाता है कि माधव डरकर उसे अपने घर ले आता है। वहाँ उसकी मुलाकात होती है माधव की बेटी मधेश्वरी यानी 'मैड' से।

अब आगे...

माधव के घर खामोशी के साथ दोपहर का खाना चल रहा था जो उनके घर के लिए बिलकुल नई बात थी। लेकिन कभी भी चिंगारी सुलग सकती थी।

अपने सभी सवालों को अपने भीतर दबाए मंगलेश्वरी सब्ज़ी-रोटी परस रही थी। लेकिन साथ ही साथ वो मुम्बई के कथित डॉन के लड़के को तिरछी नज़रों से देखती जा रही थी। न जाने बॉम्बे के डॉन के लड़के क्या खाते होंगे?

मधेश्वरी तो भीतर ही भीतर गुस्से से पागल हो रही थी कि उसे इस घुसपैठिए के साथ अपनी दो रोटियाँ बाँटना पड़ रही थीं। वो किट्टू को लगातार गुस्से से देख रही थी।

लेकिन गुस्से से देखने के खेल में ये घुसपैठिया तो चैम्पियन था, और इसका 'श्रेय' उसके परिवार को जाता था। लेकिन यहाँ उसने अपने इस घातक अन्दाज़ को सिर्फ मधेश्वरी तक ही सीमित रखा था क्योंकि उसे खूब अच्छे से पता था कि वो यहाँ जब तक भी रुकेगा खाना तो उसे मंगलेश्वरी ही देगी। और अब उसे यहाँ अच्छा लगने लगा था। इन अनजान लोगों के बीच उसे काफी मज़ा आ रहा था। और हो न हो उस बोर्ड का कोई रहस्य ज़रूर था जिसके लिए मधेश्वरी उस पर चिल्लाई थी। सबसे बड़ी बात तो ये थी कि दुनिया के सबसे अजीबोगरीब परिवार से कुछ समय के लिए अलग रहने में किट्टू को कोई हर्ज नहीं था।

रही बात माधव की, वो कोई तरकीब ढूँढ रहा था कि किसी तरह जद्दोजहद करके इस मुश्किल स्थिति से निकला जाए। भले ही वो कुल्फी बेचने का बड़ा विशेषज्ञ हो, लेकिन इस प्रकार की चुनौती का सामना उसने पहले कभी नहीं किया था।

काफी सोच-विचार करने के बाद, माधव ने अपना प्लान सामने रखा: "अगर हम अपने पड़ोसियों से कहें कि हमारे पास एक खोया हुआ लड़का है और..."

किट्टू को ये प्लान बकवास लगा। ये गाँव बहुत ही छोटा था और ऐसा लग रहा था कि बाकी इलाके से इसका शायद ही कोई सम्पर्क हो। लेकिन इससे पहले कि वो कुछ कह पाता, मंगलेश्वरी की आवाज़ वापस लौट आई।

"क्या बकवास आइडिया है! हम पड़ोसियों को क्यों बताएँ? वो लोग इसमें क्या करेंगे? क्या वो कोई अखबार वाले हैं जो इसके गुम होने की खबर इसके माँ-बाप तक पहुँचा देंगे?"

माधव ने अपने सिर को थोड़ा और खुजलाया।

"हम पुलिस के पास जा सकते हैं..."

"नहीं!!!" दो आवाज़ें चीखीं। और तीसरी अपने जवाब के रूप में अपनी एकमात्र रोटी को ज़ोरों से चबाने लगी।

"ओफ्फो, मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूँ। मैं तो अपनी कुल्फियाँ बेचने जा रहा हूँ। कम से कम कुछ पैसे तो कमा लूँ।"

"बाबा, फोन," मैड बोली।

"फोन? क्या फोन?" माधव ने पूछा।

"चलो हम पोस्ट ऑफिस चलकर इसके बाबा को फोन लगाते हैं। इससे उनका नम्बर ले लो।"

माधव को बहुत गर्व हुआ कि उसकी बेटी कितनी होशियार है!

अब सबकी नज़रें किट्टू की तरफ घूम गईं, जिसने अपने दिमाग में जल्दी से कुछ हिसाब-किताब लगाया। अगर वो किसी तरह 24 घण्टों तक दुनिया के सबसे अजीबोगरीब परिवार से दूर रह सके तो उसके लिए बहुत अच्छा रहेगा। इन 24 घण्टों में से आठ तो सोने में निकल जाएँगे और उस दौरान उसे इस खिझाऊ लड़की को नहीं झेलना पड़ेगा। ये घर बहुत आरामदेह था, और डॉन वाली कहानी के मारे बेचारा कुल्फीवाला और उसकी पत्नी किट्टू से डरे हुए थे। इसलिए यहाँ टिके रहने में काफी मज़ा था।

उसने सोचा कि कल तक उसका परिवार ज़रूर इस बात का पता लगा लेगा कि वो कहाँ है। आखिरकार वो 13 लोगों की टीम जो है!

इन नेक विचारों और इरादों के साथ किट्टू ने माधव को एक गलत फोन नम्बर दे दिया।

नम्बर रूपी हथियार से लैस, और इस बात से बिलकुल अनजान कि इस नम्बर से उसे कुछ हासिल नहीं होने वाला था, माधव घर से निकल पड़ा।

किट्टू की सुबह काफी लम्बी और थकाऊ रही। झोंपड़ी की ठण्डक, और पेट अच्छे से भरा होने की वजह से उसे नींद आ रही थी। उसने मंगलेश्वरी से पूछा कि वो कहाँ लेट सकता है। मंगलेश्वरी ने उसे एक कोना बता दिया जहाँ लेटते से ही उसे नींद आ गई।

और तब मैड को उससे हिसाब बराबर करने का मौका मिल गया।

जब किट्टू की नींद टूटी तो उसे बाहर से हँसने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दीं। उसकी आँखें अभी भी बन्द थीं और अपनी बैसाखियों को उठाने के लिए हाथ बढ़ाते हुए उसने सोचा कि उसके सबसे छोटे चचेरे भाई पोटू को बाकी तीनों गुदगुदी कर रहे होंगे।

पर उसकी आँखें फटी रह गईं जब उसे एहसास हुआ कि वो अपने घर के बिस्तर पर नहीं बल्कि मध्य प्रदेश के अन्दरूनी इलाके में स्थित एक झोंपड़ी के भीतर एक फटी हुई चटाई पर सो रहा था, और अपने परिवार से बहुत दूर था। उसने बैसाखियाँ ढूँढने के लिए उस खाली कमरे में अपनी नज़रें दौड़ाईं। पर वो कमरे में थीं ही नहीं!

अब किट्टू को घबराहट होने लगी। उसे फिर से बाहर से आ रही आवाज़ें सुनाई दीं। बाहर जाकर देखने का केवल एक ही तरीका था। और वो तरीका उसे सख्त नापसन्द था, लेकिन उसके पास और कोई चारा नहीं था। वो फर्श पर घिसटते हुए दरवाज़े तक गया।

मैड इमली का आधा पेड़ चढ़ी हुई थी, और दो लड़कियाँ पेड़ के नीचे खड़ी थीं। उन्होंने अपनी स्कर्टों की झोलियाँ बना ली थीं। वो लोग मज़े ले-लेकर चिल्ला रही थीं और मैड किट्टू की एक बैसाखी की मदद से इमलियों को नीचे उनकी स्कर्टों में गिराती जा रही थी।

"मैमैमैडडड!" किट्टू ज़ोर-से चिल्लाया।

वो रोना बिलकुल नहीं चाहता था, लेकिन फिर भी उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसे महसूस हो रहा था कि क्रोध उस पर हावी हो रहा है। उसे असहाय होना बहुत बुरा लगता था।

मैड ने जैसे ही मुड़कर किट्टू को देखा, उसके चेहरे की खुशी एकदम से गायब हो गई। उसने जल्दी से अपनी सहेलियों को वहाँ से भगाया, पेड़ से नीचे कूदी और किट्टू की बैसाखियाँ लेकर उसके पास आ गई।

"स-स-सॉरी। ये लो।" इतना बोलकर और किट्टू को उसकी बैसाखियाँ थमाकर मैड वहाँ से भाग गई।

किट्टू उपेक्षा से खड़ा हुआ और झोंपड़ी से बाहर निकल गया। लेकिन जाने से पहले उसने दरवाज़े के पास पड़ा स्केटबोर्ड ज़रूर उठा लिया था।

जारी...

क्यों-क्यों?

जून अंक में हमने एक लेख दिया था - 'घर में क्या होता है?' उसमें इस मुद्दे पर बात हुई थी कि आमतौर पर घर के कामों को काम नहीं माना जाता। घरवालों को घर के कामों के लिए कोई पैसे भी नहीं मिलते। सिर्फ यही नहीं अर्थशास्त्री भी घर के कामों को काम की गिनती में नहीं लेते हैं।

इससे जुड़ा हमारा सवाल था - तुम्हारे परिवार के सभी सदस्य बच्चे-बूढ़े, अम्मा-बाबा, भाई-बहन, दादा-दादी आदि परिवार के लिए कुछ न कुछ करते होंगे। तुम्हारी राय में घर पर ये सब जो भी काम करते हैं, उनके लिए इन्हें कितने पैसे मिलने चाहिए और क्यों?

यह रकम घर से बाहर जाकर कमाकर लाने वाले पैसों से कम है या ज़्यादा?

तीसरी से लेकर ग्यारहवीं के बच्चों से हमें कई सारे जवाब मिले। कई बच्चों ने सिर्फ पहले सवाल का जवाब दिया है। कुछ स्कूलों में पहले सवाल को ऐसे समझा गया है कि क्या घर के कामों के लिए परिवार वालों को पैसे मिलने चाहिए या नहीं। हमें मिले जवाबों में से कुछ हम यहाँ छाप रहे हैं। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें लिख भेजना...

मेरे घर में ऐसे कामों की गिनती नहीं की जा सकती। दिन भर गायों को चराने का पैसा कैसे तय हो? गायों का दूध सुबह और शाम निकालना होता है। दूध निकालना कठिन काम है। मेरे हिसाब से इस काम के लिए यदि बाहर से किसी को बुलाएँगे तो वह बीस हज़ार रुपए महीना लेगा।

सागर, दसवीं, बंगर गाँव, पौड़ी, उत्तराखण्ड

पूरे साल खेतों में बैलों से हल जोतना पड़ता है। खेतों की निराई-गुड़ाई का काम भी चलता है। बीज बोना और फसलों की रखवाली का पैसा तो बहुत हो जाएगा। इन कामों को पैसों में तौलना गलत है। ऐसे तो बच्चों को पालने का पैसा भी माँ को मिलना चाहिए?

गायत्री रावत, दसवीं, बंगर गाँव, केवर्स, पौड़ी, उत्तराखण्ड

घर हमारा है इसीलिए घर के काम के हमें पैसे नहीं मिलते। यदि हम दूसरों के लिए काम करते हैं तो वो हमें पैसे देते हैं। लेकिन घर में चाहे जितने भी काम करो कोई पैसा नहीं मिलता। और पैसा देगा कौन? मेरी मम्मी घर में मेरे पापा से ज़्यादा काम करती हैं। लेकिन उन्हें कोई पैसा नहीं मिलता। मुझे पता भी नहीं कि उन्हें पैसा कौन देगा। लेकिन जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो मैं उन्हें हर महीने 1000 रुपए दूँगा ताकि वो चूड़ियाँ खरीद सकें।

अभिजीत राजवंशी, चौथी, माधोपुर एल पी स्कूल, मजूली, असम

मेरे घर में उम्र के हिसाब से सब लोगों के काम बँटे हुए हैं। मेरी दादी और माँ पूरे घर में सबसे ज़्यादा काम करती हैं। दादी घर में सजावट और पूजा का सामान बनाती हैं, जैसे भगवान के छोटे-छोटे कपड़े, गुड़िया, रस्सियों के पायदान आदि। माँ झाड़ू लगाना, खाना बनाना, कपड़े धोना, मेहमानों व दादा-दादी का ख्याल रखना यह सब करती हैं। वह पापा की दुकान में हाथ भी बँटाती हैं। जब हम बीमार होते हैं तो अपने काम के साथ हमारी सेवा भी करती हैं। दादा हम सब बच्चों को पढ़ाते व अपना अनुभव बताते हैं। सुबह-सुबह हमें अखबार पढ़कर भी वही सुनाते हैं। पापा रात में दुकान से आकर खाना खाकर सो जाते हैं। माँ सबसे देर में सोती हैं। मैं भी कभी-कभी माँ की मदद कर देती हूँ, जैसे पेड़ों में पानी डाल देती हूँ।

मेरे हिसाब से वैसे तो माँ की मेहनत अनमोल है लेकिन यदि देखा जाए तो उसकी मासिक आय 35,000 रुपए होनी चाहिए क्योंकि वो पूरा घर सँभालती है। दादी को भी कम से कम 20,000 रुपए तो मिलना ही चाहिए। दादा को 3000 और 500 रुपए तो मुझे भी मिलने चाहिए क्योंकि थोड़ा काम तो मैं भी करती हूँ।

मेरी माँ व दादी यदि बाहर काम करें तो अवश्य ही उन्हें इससे ज़्यादा आय मिलेगी। दादा को लगभग इतनी ही और मुझे शायद इससे कम मिले।

श्रीजा, सातवीं, के के एकेडमी लखनऊ, उत्तर प्रदेश

रोज़ स्कूल आना भी तो एक काम है। घर में हर रोज़ दिया जलाना भी काम है। चूल्हे की आग जलाना वह भी हर रोज़ एक काम है। गाय को घास देना और पानी पिलाना काम है। पैसे तो मिलने ही चाहिए।

अभिषेक रावत, नवीं, राजकीय इंटर कॉलेज केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

••••••••••

हमारे घरों की महिलाएँ जैसे माँ, दादी, चाची, ताई बहुत काम करती हैं। उनकी मेहनत का कोई अन्दाज़ा नहीं लगा सकता। जो दलित परिवार होते हैं, उनमें बच्चे-बूढ़े, जवान सभी वेतन का स्रोत खोजते फिरते हैं। पर उन्हें अपनी मेहनत के हिसाब से कम पैसे मिलते हैं। मेरे परिवार में 8 सदस्य हैं। माँ घर सँभालती हैं। और घर में पापड़, चिप्स, चकली, अचार, मुरब्बा, गलका वगैरह-वगैरह बनाती हैं। मेरी दादी उनका हाथ बँटाती हैं। वे हमारे फटे-पुराने कपड़ों को सिल देती हैं। तकिए, कुशन, चादरें, पर्दे, पायदान और स्वेटर बुनती हैं। उन्हें क्रोशिए की सिलाई और कई अन्य कलाएँ भी आती हैं। मुझे लगता है अगर वो यह सब काम बाहर करतीं तो उनकी आय 15000 रुपए तो होती ही। हमारे समाज में घर के कामों को ज़्यादा महत्व नहीं दिया जाता। वैसे मुझे लगता है इन सब कामों के लिए घर पर पगार नहीं मिलनी चाहिए। हमें उनके प्यार को पैसों से नहीं तौलना चाहिए। पर हमें कभी उनसे यह नहीं कहना चाहिए कि आप कुछ नहीं करती हैं।

इकरा खान, सातवीं, के के एकेडमी लखनऊ, उत्तर प्रदेश

•••••••••

मेरे घर में सबसे ज़्यादा काम मम्मी करती हैं तो सबसे ज़्यादा पैसे भी मम्मी को ही मिलने चाहिए। मम्मी हमारे लिए खाना पकाती हैं। और खेत के काम भी मम्मी ही ज़्यादा करती हैं। और घास के लिए भी जाती हैं। घर के कपड़े, बर्तन, झाड़ू-पोछा भी मम्मी ही करती हैं तो मेरी मम्मी को 25,000 रुपए मिलने चाहिए। यह बाहर काम करने पर मिलने वाले रुपए से ज़्यादा है, क्योंकि बाहर इतना काम भी नहीं होता जितना घर में होता है। बाहर इसलिए कम काम होता है क्योंकि लिखना है तो थोड़ी देर तक लिखना होता है और लिखने में कोई दर्द भी नहीं होता और लिखने में छाले भी नहीं पड़ते।

अदिति रावत, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय गणेशपुर, उत्तराखण्ड

••••••••••

परिवार के सभी सदस्य कुछ ना कुछ करते हैं जैसे रोटी बनाना, कपड़े धोना, घास काटना आदि काम करते हैं। मेरी राय में इनके लिए उन्हें 20 या 30,000 रुपए मिलने चाहिए क्योंकि लोग उनसे ऐसा ना कह सकें कि तुम्हारे पास पैसे नहीं है। कभी बाद में पैसे काम आ सकते हैं। और मम्मी का भी या किसी और का भी खाने का मन करता होगा तो वह वो चीज़ खा सकते हैं व मेरे पापा-चाचा लोगों से इनकी सैलरी ज़्यादा होनी चाहिए।

योगेश काण्डपाल, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल मातली, उत्तराखण्ड

•••••••••

हमारे घर पर मम्मी बहुत सारा काम करती हैं, जैसे खेतीबाड़ी का काम, कपड़े धुलने, गाय के लिए घास लाना और दूध निकालना, हमको भेजना। मेरे पापा और दो दीदी हैं वो भी कई काम करते हैं। जैसे पापा खाना बनाते हैं, दीदी रोटी बनाती हैं। दूसरी दीदी बर्तन धुलती है। मेरे ख्याल में यह सब जो भी काम हैं उनके लिए सिर्फ मम्मी को रुपए मिलने चाहिए लगभग 5000 रुपए। क्योंकि मम्मी अपने लिए कुछ लाए, कोई माँगे तो उसको दे। घर को चलाने के लिए मम्मी को बाहर नौकरी करने वालों से 2000 रुपए कम मिलने चाहिए।

ऋषभ कोहली, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल मातली, उत्तराखण्ड

•••••••••

हमारे परिवार के लोगों को लगभग 40,000 रुपए मिलने चाहिए क्योंकि वह सुबह के 5 बजे से रात के 11 बजे तक काम करते हैं और वह आराम भी नहीं करते। जो लोग बाहर काम करते हैं तो वह सिर्फ 5-6 घण्टे तक काम करते हैं फिर भी उन्हें नौकरी वाला कहा जाता है जबकि उनसे ज़्यादा नौकरी मम्मी करती हैं, लेकिन उन्हें ऐसा सम्मान नहीं मिलता।

रितिका, छटवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल मातली, उत्तराखण्ड

•••••••••

हमारे परिवार के सभी सदस्यों को ज़रूरत भर पैसा मिलना चाहिए ताकि घर में कोई चीज़ लेनी हो तो ले सकें और घर चला सकें। अगर ज़रूरत से ज़्यादा पैसा मिलेगा तो वह व्यर्थ चला जाएगा। जैसे पापा या घर के बुज़ुर्ग बाहर से कमाकर जो पैसा लाते हैं, तो ज़रूरत पूरा होने के बाद जो पैसा बचता है उसे वह गुटखा या शराब में खर्च कर देते हैं। और फिर घर आकर बीवी-बच्चों से झगड़ा भी करते हैं। इसलिए ज़रूरत भर पैसे ही मिलने चाहिए। माँ घर के काम सँभालती हैं और बाहर जाकर काम करने वालों से ज़्यादा काम करती हैं। इसलिए माँ को ज़रूरत से ज़्यादा पैसा मिलना चाहिए, क्योंकि वह ना तो गुटखा खाती हैं और ना ही शराब पीती हैं।

रागिनी साहू, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़

मेरे ख्याल से घर पर काम करने वाले लोगों की कमाई बाहर की कमाई के बराबर ही होनी चाहिए क्योंकि घर का काम भी कोई कम थकावट देने वाला नहीं है। जैसे हमारी मम्मी रोज़ घर में काम करती हैं और पापा बाहर में काम करते हैं। लेकिन दोनों बहुत थक जाते हैं और दोनों ही घर को सुखी रखने का प्रयास करते हैं। इस कारण दोनों को बराबर पैसा मिलना चाहिए।

विवेक देवांगन, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़

मेरे हिसाब से दोनों को बराबर पैसा मिलना चाहिए क्योंकि बाहर जाकर जो पैसा कमाता है वह उसे घर के लिए लाता है। और घर के लोग उसे खाना खिलाते हैं। वह चावल पैदा करता है और घर के लोग उसे पालते-पोषते हैं। और इस सब के लिए पैसा बाहर कमाने वाले देते हैं। इसलिए दोनों को ही बराबर पैसा मिलना चाहिए।

ओम प्रकाश ध्रुव, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़

हमारे घर में मम्मी को कम से कम 15,000 रुपए मिलने चाहिए क्योंकि वह अगर बाहर काम करती हैं तो उन्हें जो कहा जाएगा वह वहीं करेंगी। लेकिन अगर घर की बात की जाए तो उन्हें घर के सारे काम तो करने ही हैं, साथ ही साथ बच्चों को भी सँभालना होता है। और उन्हें बाहर से कुछ ज़्यादा ही काम करना पड़ता है। और बाहर काम करने पर उन्हें कम से कम 14,000 तो मिलना ही चाहिए क्योंकि धूप हो, बारिश हो, आँधी हो वह काम करने तो जाती ही हैं और उन्हें ओवरटाइम भी करना पड़ता है।

अरमान, आठवीं, दीपालया लर्निंग सेंटर दिल्ली

जब मैंने इस बार का सवाल पढ़ा तो पहले तो मैं बहुत खुश हो गया। लगा कि ऐसा होने लगे तो मैं अरबपति बन जाऊँगा। लेकिन जब मैंने आय छोड़कर अपने खर्चों पर ध्यान दिया तो लगा मैं तो फुटपाथ पर आ जाऊँगा। फिर मेरे मम्मी-पापा मुझे पता नहीं कैसे बड़ा करेंगे। अगर लोग हर चीज़ का पैसा लेने लग जाएँ तो हमारे जैसे बच्चे पता नहीं कैसे जी पाएँगे। कुछ इक्के-दुक्के शायद ही बचें। ऐसी दुनिया की कल्पना करना बड़ा मुश्किल है। ऐसे में तो एक मोहल्ले में हज़ारों रिज़र्व बैंक होंगे और हर रिज़र्व बैंक की सबसे अमीर मालकिन होगी - माँ। माँ जितना काम करती हैं उस हिसाब से तो वही सबसे धनी होगी। पर मुझे याद है मेरी माँ ने मुझसे कहा था, 'लोग चाहे जितने भी धनी हो जाएँ, बाद में उनका नि-धन ही होता है।'
वैसे, अगर ऐसी दुनिया आज से ही शुरू हो जाए तो इसे लिखने के 500 रुपए तो मेरे भी बनते हैं। है ना?

सृजन कुमार, ग्यारहवीं, बाल भवन किलकारी पटना, बिहार

मेरे घर पर पापा झाड़ू-पोछा करते हैं। उन्हें कम से कम 10,000 रुपए मिलने चाहिए क्योंकि मेरे पापा बहुत काम करते हैं। मेरी मम्मी घर पर खाना बनाती हैं और मेरी मम्मी को कम से कम 11,000 रुपए सैलरी मिलनी चाहिए क्योंकि मम्मी बहुत काम करती हैं। मम्मी की बहुत तबीयत खराब होती है तब भी करती हैं। और मेरी सैलरी भी 5000 रुपए होनी चाहिए क्योंकि मैं भी बहुत काम करता हूँ। जैसे, रोज़ पानी भरता हूँ।

रोहन, 13 वर्ष, मंज़िल संस्था, दिल्ली

सब घर में कुछ न कुछ काम करते हैं। इन कामों की पैसों से तुलना ठीक नहीं। घर के बुज़ुर्गों की सेवा करना और देखभाल करना भी तो काम है। ऐसे ही ये बुज़ुर्ग लोग छोटे बच्चों की दिन भर देखभाल करते हैं। इनको पैसे कैसे दे सकते हैं? कितना देंगे? ऐसा नहीं हो सकता।

मीनाक्षी रावत, दसवीं, कफोल गाँव, केवर्स, पौड़ी, उत्तराखण्ड

बड़े-बूढ़े, दादा-दादी, मम्मी-पापा, भाई और बहनों को पैसों की जगह प्यार और बहुत सारा सम्मान मिलना चाहिए क्योंकि अगर हमारी मम्मी हमें खाना बनाकर देती हैं तो हम उन्हें पैसे थोड़े ही ना पकड़ा देंगे। इसलिए हमें उन्हें बहुत सारा प्यार और सम्मान देना चाहिए।

नैना बत्रा, छटवीं, बिलाबाँग हाई इंटरनेशनल स्कूल, भोपाल, मध्य प्रदेश

मेरी राय में घर पर सब लोग जो भी कार्य करते हैं, उनके लिए उन्हें पैसे नहीं मिलने चाहिए क्योंकि ये सभी अपने घर के लिए छोटा-मोटा कार्य कर रहे हैं। यह उनका फर्ज है। हमें अपने माता-पिता या भाई-बहन को पैसों से नहीं तौलना चाहिए। वह घर पर जो भी कार्य करते हैं उसके लिए उन्हें पैसा न देकर उनकी ज़रूरतों व उनकी अभिलाषाओं को पूरा करना चाहिए। ऐसा करने से घर के सभी सदस्य खुशी-खुशी रहेंगे। यदि घर के सदस्य घर में काम न करके वही काम बाहर करेंगे तो उन्हें उसके पैसे मिलेंगे। उन पैसों से भी वह अपनी ज़रूरतों व अभिलाषाओं को पूरा कर लेंगे। पर हम ऐसा करने ही क्यों दें हम उनकी देखभाल करनी चाहिए व उन्हें खुश रखना चाहिए।

सौरव, ग्यारहवीं, दीपालया लर्निंग सेंटर गोलेकुआँ, दिल्ली

नहीं, हमारे परिवार को पैसे नहीं मिलने चाहिए, क्योंकि जब हमारी दादियाँ अति उत्तम खाना बनाती हैं तब ऐसा तो नहीं होता कि वह खुद भी उसका आनन्द नहीं उठातीं। वह खुद को मिलाकर खाना बनाती हैं कि वह भी खा सकें। हमारी खाना बनाने वाली आँटियाँ तो सिर्फ खाना बनाकर पैसे ले जाती हैं, वह उसे खाकर पैसे थोड़े ही ना लेती हैं। हमारी मम्मियाँ जब घर साफ करती हैं तब वो भी तो उसी घर में रहती हैं। तो हमारे घर वाले भले ही काम करते हैं, पर पैसों के लिए नहीं।

वैभवी चौबे, पाँचवी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, पटना, बिहार

मम्मी हमें सुबह उठाती हैं। हमें मंजन कराती हैं, नहलाती हैं, तैयार करती हैं। हमारे लिए टिफिन तैयार करती हैं। मेरे पापा बवई मे काम करते हैं। मम्मी खाना बनाती हैं। उन्हें कितने पैसे मिलने चाहिए। उन्हें 5000 मिलने चाहिए।

नूर फातिमा, तीसरी, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मेरे हिसाब से सिर्फ उन कामों को अहमियत देना जिससे वेतन मिलता हो, सरासर गलत है। पहले जब बड़ी-बड़ी फैक्ट्रीयाँ व उद्योग नहीं थे तब गाँव के लोग अपने परिवार की मदद से कुछ छोटा-मोटा काम कर लेते थे। इनमें एक बहुत कॉमन काम था - खेती। कुछ लोग अन्य काम करते थे, जैसे पशु-पालन, कुटीर उद्योग, दूध डेयरी इत्यादि। लेकिन अब इन कामों को ज़्यादा महत्व नहीं दिया जाता है। महत्व सिर्फ उन कामों को दिया जाता है जो बाहर जाकर किए जाते हैं। लेकिन जो व्यक्ति घर में काम करते हैं उन्हें कुछ खास महत्व नहीं दिया जाता। मेरे हिसाब से मम्मी को पापा की तनख्वाह में से 10% मिलना चाहिए क्योंकि पापा बाहर जाकर मेहनत करते हैं तो मम्मी घर पर बहुत मेहनत करती हैं और हम सबका ध्यान भी रखती हैं। पापा और हम तो हर संडे छुट्टी मनाते हैं लेकिन मम्मी को छुट्टी नहीं मिलती है।

हर्षिता कोशले, नवीं, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

घर में हम अपने लिए काम करते हैं। घर का काम रोज़ाना एक जैसा ही होता है। इसलिए हमें उसके लिए पैसे नहीं मिलते। लेकिन जो काम हम दूसरों के घरों में करते हैं उसके लिए हमें पैसे मिलते हैं। दूसरों से पैसे इसलिए मिलते हैं क्योंकि हम उनके लिए काम करते हैं। घर का काम तो अपना होता है। जैसे जब हम घर में खाना बनाते, खाते हैं तो केवल हमें ही उसका लाभ मिलता है। क्योंकि जो खाना हम खाते हैं वो हमारे पेट में ही तो जाता है, दूसरों के पेट में थोड़े ही ना जाता है।

सुरजीत सरकार, छटवीं, श्री श्री पीताम्बर देवा हाई स्कूल माजुली, असम

बगीचा-ए-रसोई

रोज़ाना रसोई में इस्तेमाल होने वाली कई चीज़ों से तुम अपने लिए साग-सब्ज़ियाँ और फल उगा सकते हो। और फिर अपनी उगाई इन सब्ज़ियों-फलों को वापिस रसोई में ले जाकर पका सकते हो, खा सकते हो।

इसके लिए तुम्हें सिर्फ ये चाहिए

• बरतन

घर में पुराने, बेकार पड़े बरतन - जैसे प्लास्टिक के डिब्बे, पुराने मग्गे, बालटियाँ, पेंट की बालटियाँ और पुराने कूड़ेदान ढूँढो। इन्हें मिट्टी व खाद से भर लो। फिर इन्हें बालकनी में, खिड़की के पास या अपने बगीचे में रखो जहाँ सूरज की रोशनी इन तक पहुँचे। पानी को बाहर निकालने के लिए बरतनों के तले में छोटे-छोटे छेद कर लो।

• मिट्टी

बगीचे की देखभाल करने वाले किसी व्यक्ति से पूछ लो कि पौधे उगाने के लिए सबसे उपयुक्त मिट्टी तुम्हें कहाँ मिल सकती है। वैसे मिट्टी व खाद तुम नर्सरी से भी खरीद सकते हो। किसी खाली प्लॉट या रोड के किनारे से मिट्टी लेने में कुछ दिक्कतें हो सकती हैं - बहुत सारे पत्थर, शीशे के टुकड़े या अन्य खतरनाक कचरा इत्यादि। पाँच भाग मिट्टी में एक भाग खाद मिला लो। इस मिश्रण को हरेक बरतन में आधे से ज़्यादा भर दो।

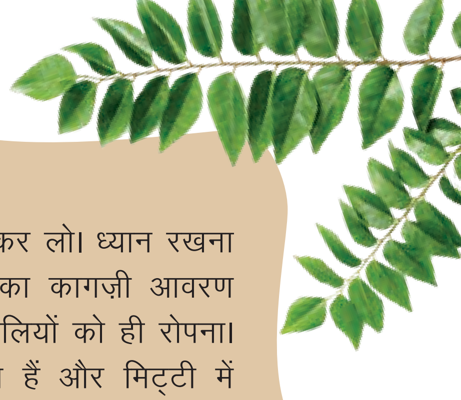

• बीज, कलम और फलियाँ

पहले ज़रा सोच के बताओ तुम्हारी रसोई में कोई बीज हैं? फिर अपनी रसोई में बीजों को तलाशना शुरू करो। बीज तुम्हें अलग-अलग आकार व रंगों में मिल जाएँगे। ऐसे बीज छाँटो जो टूटे ना हों और जिनके छिलके न निकले हों।

चलो, पहले सरसों (या राई) और मेथी जैसे कुछ बीजों से शुरू करते हैं। वैसे तुम पौधों के अन्य भागों से भी पौधे उगा सकते हो। जैसे लहसुन को उसकी कली से उगा सकते हो। पुदीने को कलम से और पूरे पौधे से भी उगा सकते हो। पुदीना काफी आसानी से फैलता व बढ़ता है।

• पुदीना

तर्जनी उँगली (इंडेक्स फिंगर) से मिट्टी में एक या दो इंच का गड्ढा बना लो। इस गड्ढे में पुदीने की जड़ को रोप दो। मिट्टी को पुदीने के चारों ओर थपथपा दो ताकि पौधा अपनी जगह पर स्थिर रहे। इसी तरह पुदीने के कुछ और पौधे भी रोप दो। पौधों के बीच में दो-दो इंच की जगह खाली रखना।

• मेथी

तर्जनी उँगली से मिट्टी में एक इंच गहरा छेद करो और इसमें एक बीज डाल दो। एक या दो इंच की दूरी पर ऐसे कई सारे छेद करो और इनमें बीज डालते जाओ, जब तक कि पूरा बरतन ना भर जाए। बीजों को मिट्टी से ढँक दो और मिट्टी को हलके से थपथपा दो।

• सरसों

सरसों के दानों को लगभग 6 इंच की दूरी पर रोपो, क्योंकि अंकुरित होने और बढ़ने पर इन्हें ज़्यादा जगह की ज़रूरत होगी।

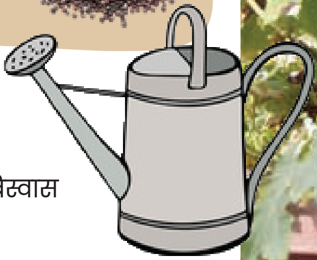

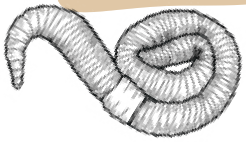

डिज़ाइन : इशिता देबनाथ बिस्वास

• लहसुन

लहसुन के सिरों को अलग कर लो। ध्यान रखना कि हर कली के चारों ओर का कागज़ी आवरण साबुत बचा रहे। केवल बड़ी कलियों को ही रोपना। लहसुन की जड़ें उथली होती हैं और मिट्टी में फैलने के लिए इनके पास काफी सारी जगह होनी चाहिए। एक कली को खड़ा रखकर मिट्टी में डेढ़ इंच या इससे कम गहराई पर गाड़ दो। कलियों को एक-दूसरे से 6 इंच की दूरी पर गाड़ना।

याद रखना कि मिट्टी में नमी हमेशा बनी रहनी चाहिए। और बरतनों में पानी उड़ेलना नहीं, बल्कि उनमें रोज़ाना थोड़ा-थोड़ा पानी छिड़कना।

बीज कब तक जीवित रहते हैं?

तुम्हारी रसोई में पाए जाने वाले बीज जीवित होते हैं और साँस लेते हैं। यदि इन्हें सूखी व बहुत ठण्डी परिस्थितियों में संग्रहित किया जाए तो यह सैकड़ों सालों तक जीवित रह सकते हैं। तुम यकीन नहीं करोगे, कुछ सालों पहले साइबेरिया में शायद एक हिमयुग की गिलहरी द्वारा दबाए गए बीजों से बत्तीस हज़ार साल बाद पौधे उगे।

प्रतियोगिता

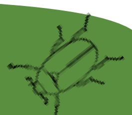

अपने रसोई-बगीचे की तस्वीरें हमें भेजो। पौधे उगाने का तुम्हारा यह सफर कैसा रहा, chakmak@eklavya.in पर हमें बताओ और बागवानी पर एक किताब जीतने का मौका पाओ। क्या तुम्हें पौधे उगाने में कोई दिक्कतें आईं? तुम्हारे पौधों को बढ़ा होने में कितना समय लगा? हम इस बारे में विस्तार से जानना चाहेंगे, तो लिखना ज़रूर।

nature conservation foundation
science for conservation

अनुवाद: कविता तिवारी

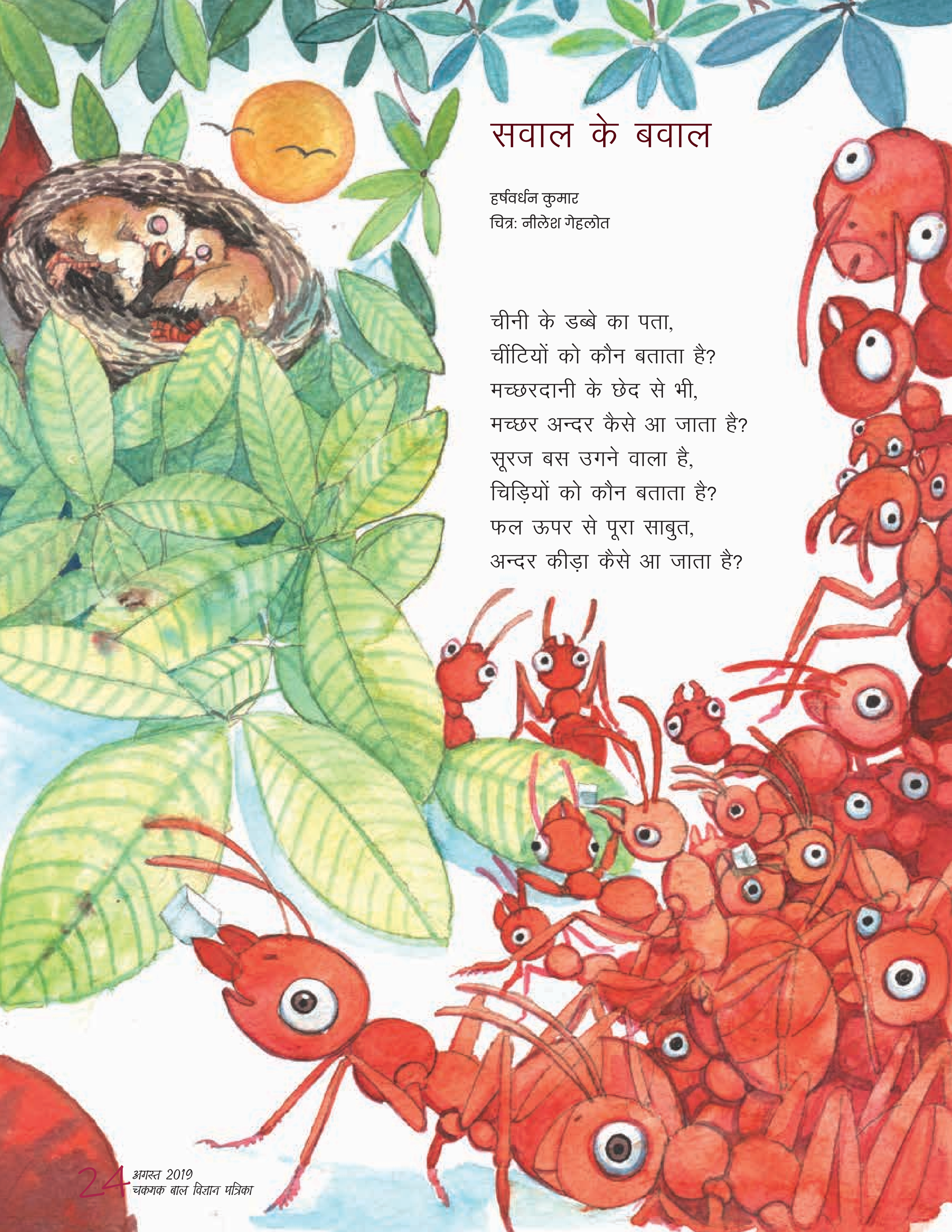

सवाल के बवाल

हर्षवर्धन कुमार
चित्र: नीलेश गेहलोत

चीनी के डब्बे का पता,
चींटियों को कौन बताता है?
मच्छरदानी के छेद से भी,
मच्छर अन्दर कैसे आ जाता है?
सूरज बस उगने वाला है,
चिड़ियों को कौन बताता है?
फल ऊपर से पूरा साबुत,
अन्दर कीड़ा कैसे आ जाता है?

भारतीय सेना के साथ पाँच दिन...

रितिका गौर

हाल ही में मुझे केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा, सीमा-दर्शन प्रोग्राम के अन्तर्गत भारतीय सेना व बॉर्डर को करीब से जानने का मौका मिला। इस प्रोग्राम के लिए मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और गुजरात की कक्षा ग्यारहवीं व बारहवीं की 50 छात्राओं का चयन हुआ था। भोपाल के केन्द्रीय विद्यालय नं. 1 से मैं अकेली इस प्रोग्राम में शामिल थी। यात्रा की शुरुआत भुज, गुजरात से हुई। यहाँ सबसे पहले हमारी मुलाकात हुई कैप्टन नीलिमा से। उनके बिना शायद 5 दिन की यह यात्रा सफल नहीं हो पाती। उन्होंने हमें कई चीज़ों के बारे में बताया और लोगों से मिलवाया। सेना की अलग-अलग यूनिट्स, उनके काम करने के तरीके, उनका रहन-सहन, दिनचर्या आदि को समझने का यह एक खूबसूरत मौका था।

पहला दिन - एयर फोर्स स्टेशन, भुज

शुरुआत हुई एयर फोर्स स्टेशन से। हमने एयर फोर्स की तीन यूनिट्स देखीं और जाना कि कैसे फाइटर प्लेन को उड़ाया जाता है, कैसे उन्हें बनाया व ठीक किया जाता है। उड़ने के पहले और बाद में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। देखने में जितना आसान लगता है उससे कहीं ज़्यादा कठिन है एक प्लेन को उड़ाना, उसका ध्यान रखना। कैप्टन गौरव ने हमें फ्लाइंग एरिया के बारे में बताया तो कैप्टन लक्षिता ने ग्राउण्ड ड्यूटीस के बारे में।

हमारे लड़ाकू विमानों को कोबरा भी कहा जाता है। हर विमान में केवल पायलेट ही होता है। विमान के कॉकपिट में काफी सारे बटन होते हैं। इन्हें पायलट अकेले सँभालता है। पायलेट बनने का मौका सिर्फ एक बार मिलता है। अगर आपने पहली बार में टैस्ट पास नहीं किया तो यह मौका हमेशा के लिए चला जाता है। उड़ान भरने से पहले एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) यूनिट हवा की गति, मौसम आदि की जाँच करती है और पायलेट को सलाह देती है। आसपास की बाकी चीज़ों का ध्यान रखती है। उड़ने से पहले 4 बार विमान की जाँच होती है। इतनी लम्बी प्रक्रिया के बाद विमान उड़ता है। इसके बाद भी बाकी सब का काम खत्म नहीं होता। एटीसी यूनिट उड़ते हुए विमान को सिग्नल देना, सलाह देना, जानकारी देना आदि काम करती रहती है।

दूसरा दिन - भूमि-आधारित सेना के साथ

दूसरे दिन हम कमांडर से मिले। उन्होंने हमें आर्मी में भर्ती होने के बारे में बताया। भूमि-आधारित सेना से भी हमारी मुलाकात हुई। इसकी तीन मुख्य यूनिट हैं। पहली इन्फेंट्री यूनिट, जिसे हम पैदल सेना भी कह सकते हैं। इन्फेंट्री यूनिट में पैदल सैनिक अपने हथियार के साथ सबसे आगे होते हैं। दूसरी आर्टिलरी यूनिट, जो पीछे से बड़े हथियारों से सैनिकों की सहायता करती है। और तीसरी यानी कि आर्मर यूनिट टैंक्स सँभालती है। इन सभी यूनिट्स के लिए सैनिक व जवान कठिन प्रशिक्षण के बाद तैयार होते हैं। कम पानी में रहना, अपना काम खुद करना, खाना बनाना, हथियार चलाना सीखना, भागना-दौड़ना, एक्सरसाइज़ करना, मेहनत करना, परिवार से दूर रहना... यह सब तो सिर्फ कुछ ही चीज़ें हैं। इससे भी ज़्यादा कठिन परिस्थितियों में रहना सीखना पड़ता है। एक मज़ेदार चीज़ जो हमने देखी, वह थी गुरुद्वारा और मन्दिर का एक ही छत के नीचे होना। यहाँ दोनों धर्मों की पूजा होती है।

तीसरा दिन - लखपत और कोरी क्रीक में

लखपत भुज से कुछ 3-4 घण्टे की दूरी पर है। यहाँ हमें समुद्र के पास भारतीय सेना के काम को समझने का मौका मिला। हम कुछ समय कोरी क्रीक पर भी रहे। कोरी क्रीक से थोड़ी ही दूरी पर समुद्र लग जाता है। यहाँ दूर-दूर तक पीने का पानी उपलब्ध नहीं है। खारे पानी के कारण भी सैनिकों को समस्या होती है। यहाँ हमें लखपत का किला देखने को मिला। इसकी बाउण्ड्री से कुछ ही दूरी पर पाकिस्तान लग जाता है। हमारा दिन का खाना लखपत गुरुद्वारा साहिब में हुआ। लखपत गुरुद्वारा साहिब बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ गुरु नानक अपनी मक्का की यात्रा के दौरान रुके थे। लंगर में एक स्वादिष्ट भोजन के बाद हम पहुँचे कोटेश्वर मन्दिर। बहुत ऊँचाई पर है यह मन्दिर। यहाँ से दूर-दूर तक सिर्फ समुद्र नज़र आता है। यहाँ की खूबसूरत वास्तुकला इस जगह को और भी खूबसूरत बनाती है। तीसरे दिन का अन्त बस के लम्बे सफर में गाने गाते हुए हुआ।

चौथा दिन - राइफल फाइरिंग का अनुभव

अगला दिन राइफल फायरिंग के नाम रहा। हमारे जैसे किसी भी सामान्य व्यक्ति के लिए यह एक अनोखा मौका होगा। पूरे इंस्ट्रक्शन और सेफ्टी के साथ हमने राइफल चलाई। यहाँ सभी जगहों व कामों के अपने नियम होते हैं। शूटिंग के इलाके में लाल झण्डे लगे रहते हैं ताकि सामान्य लोगों को पता रहे कि यह जगह सेना के अन्दर आती है। शूटिंग करने से पहले बिगुल बजाया जाता है ताकि आसपास घूम रहे जानवर व लोग सावधान हो जाएँ कि कुछ ही देर में फायरिंग होने वाली है। यह काम बहुत धैर्य और अनुशासन के साथ किया जाता है। फायरिंग के वक्त सही पोजीशन बनाने, राइफल पकड़ने, कब ट्रिगर पर हाथ रखना है और कब फायर करना है, इस सब में सैनिकों ने हमारी मदद की। शान्त मन से, बिना डरे मैंने भी राइफल चलाई और 100 मीटर के टारगेट में 4 में से 4 बार मेरा निशाना सही लगा।

शाम के वक्त हमने भुजिया किला देखा। यह भुज की प्रसिद्ध जगहों में से एक है। काफी लम्बी चढ़ाई के

बाद ऊपर एक मन्दिर है। पूरा भुज इस किले से नज़र आता है। यहाँ से सूरज ढलते हुए देखना इस पूरी यात्रा की कुछ बहुत खूबसूरत चीज़ों में से एक है।

पाँचवां दिन - भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर

आखिरी दिन हमें भारत-पाकिस्तान बॉर्डर देखने का मौका मिला। बॉर्डर का नाम सुनते ही मन में आता है कि वहाँ माहौल कैसा होगा? आसपास रह रहे लोग कैसे होंगे? कैसी स्थिति होगी...? इन सारे सवालों का जवाब हमें यहाँ आकर मिला। 3 घण्टे लम्बा बस का सफर तय करके हम बॉर्डर के पास पहुँचे। यहाँ जगहों के नाम नहीं होते, बल्कि उन्हें नम्बरों से बुलाया जाता है। बॉर्डर से लगी हुई जगह पर बीएसएफ रहती है। स्थिति खराब होने लगे या लड़ाई की सम्भावना हो तो भारतीय सेना इस जगह पर आ जाती है। यहाँ माहौल शान्त है लेकिन यहाँ के कठिन वातावरण में रहना बहुत मुश्किल है। चारों ओर फैला रेगिस्तान, दूर-दूर तक किसी का ना होना, कोई पेड़-पौधे या पानी नहीं।

यहाँ हम कैप्टन कौशिक से मिले। उन्होंने हमें बताया कि कैसे दोनों देशों के लोग कुछ-कुछ दिनों में फ्लैग मीटिंग्स करते हैं। इन मीटिंग्स में दोनों देशों के लोग बॉर्डर्स के बीच की जगह पर मिलते हैं। कुछ इलाके ऐसे भी हैं जहाँ बॉर्डर नहीं बनी हैं। इन जगहों से कभी-कभी कोई पाकिस्तानी भटकते-भटकते भारत आ जाता है, या कभी कोई भारतीय पाकिस्तान पहुँच जाता है।

यह देखकर अच्छा लगा कि किस तरह लोग साथ रहते हैं, एक-दूसरे की मदद करते हैं। सेना आपको स्वावलम्बी बनाती है और साथ रहना भी सिखाती है। देश के इस ज़रूरी भाग को देख पाना मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। ऐसे समय में जब चारों ओर सिर्फ युद्ध की बातें हो रही हैं, कैप्टन कौशिक का यह कहना कि 'युद्ध यहाँ कोई नहीं चाहता' शायद बहुत मायने रखता है।

हमेशा बॉर्डर पर लड़ाई रहे ज़रूरी नहीं, लोग खुश भी हो सकते हैं। हमेशा सेना के लोग कठोर रहें ज़रूरी नहीं, सिर्फ अनुशासन ज़रूरी है। हमेशा दुश्मनी बनी रहे ज़रूरी नहीं, लोग दोस्त भी हो सकते हैं...।

कुछ लोगों को मच्छर ज़्यादा क्यों काटते हैं?

यह तो जानी-मानी बात है कि कुछ लोगों को मच्छर बहुत ज़्यादा काटते हैं, जबकि कुछ लोग खुले में बैठे रहें तो भी मच्छर उन्हें नहीं काटते। तो चलो, सबसे पहले यह पता करते हैं कि इन्हें हमारा ठिकाना मालूम कैसे चलता है। मच्छर कार्बन डाईऑक्साइड की मदद से अपने शिकार को ढूँढते हैं। हम जो साँस छोड़ते हैं उसमें कार्बन डाईऑक्साइड अधिक मात्रा में होती है। यह कार्बन डाईऑक्साइड आसपास की हवा में तुरन्त विलीन नहीं होती, बल्कि कुछ समय तक हमारे आसपास ही टिकी रहती है। इसी कार्बन डाईऑक्साइड के सहारे मच्छर हमारी ओर बढ़ते हैं।

मच्छर कार्बन डाईऑक्साइड की बढ़ती सान्द्रता की ओर रुख करके उड़ते रहते हैं। और ऐसा करना इन्हें हमारे करीब ले आता है। कार्बन डाईऑक्साइड की सान्द्रता की मदद से यह 50 मीटर दूर के अपने लक्ष्य को भाँप सकते हैं। यह तो हुई सामान्य-सी बात। लेकिन कार्बन डाईऑक्साइड के पैमाने पर तो सारे मनुष्य लगभग बराबर होंगे। तो फिर मच्छर व्यक्तियों के बीच भेद कैसे कर पाते हैं।

वैज्ञानिकों का मत है कि इस मामले में मच्छर कई चीज़ों का सहारा लेते हैं। इनमें त्वचा का तापमान, व्यक्ति के आसपास मौजूद जलवाष्प और व्यक्ति का रंग महत्वपूर्ण हैं। मगर सबसे महत्वपूर्ण अन्तर उन रसायनों से पड़ता है जो हमारी त्वचा पर उपस्थित सूक्ष्मजीव हवा में छोड़ते रहते हैं। त्वचा पर मौजूद बैक्टीरिया पसीने के साथ निकलने वाले रसायनों को वाष्पशील रसायनों में तब्दील कर देते हैं। यह रसायन आसपास की हवा में तैरते रहते हैं। जब मच्छर व्यक्ति से करीब 1 मीटर दूर पहुँच जाता है तो वह इन रसायनों की मौजूदगी को अपने गन्ध संवेदना तंत्र से ग्रहण करके इनके बीच भेद कर सकता है। सूक्ष्मजीवों द्वारा उत्पन्न इस रासायनिक गुलदस्ते में 300 से ज़्यादा यौगिक पाए गए हैं। और यह मिश्रण व्यक्ति की आनुवंशिक (जेनेटिक) बनावट और उसकी त्वचा पर मौजूद सूक्ष्मजीवों से तय होता है। तो यह है तुम्हारी यूनिक आइडेंटिटी मच्छर के दृष्टिकोण से।

जिन इन्सानों की त्वचा पर सूक्ष्मजीवों की ज़्यादा विविधता पाई जाती है, उन्हें मच्छर कम काटते हैं। कम सूक्ष्मजीव विविधता वाले लोग मच्छरों को ज़्यादा लुभाते हैं। इन रासायनिक गुलदस्तों के संघटन में छोटे-मोटे बदलावों से मच्छरों द्वारा काटे जाने की सम्भावना में बहुत अन्तर पड़ता है। बीमार होने पर यह संघटन बदल भी सकता है। अब सूक्ष्मजीव विविधता को बदलने के बारे में तो तुम खास कुछ नहीं कर सकते, मगर एक शोध में यह पाया गया है कि मच्छरों को काला रंग पसन्द है। तो बाहर पिकनिक मनाने का इरादा हो, तो हलके रंग के कपड़े पहनकर जाना।

स्रोत फीचर्स से साभार

बटरफ्लाई

कविता व चित्र

बाणीप्रसन्न

बटरफ्लाई
मक्खन मक्खी
दूध मलाई
ला के रखी!

ऐसी ही कई छोटी-छोटी नॉन-सेंस कविताओं से बुना है ये संकलन। कविताएँ जिनमें तुकबन्दी है और पाठकों के लिए मज़ा भी। एकलव्य द्वारा प्रकाशित इस किताब को तुम https://www.pitarakart.in/ से मँगवा सकते हो।

एक वानर ने की कमाल की नकल

बॉर्नियो देश के काजा द्वीप की गोहाँग नदी पर एक अद्भुत घटना हुई। ग्रैग शुस्तर ने ओरंगुटान पर अपनी किताब के लिए एक फोटो खींची। इस फोटो में पहली बार ओरंगुटान को शिकार के लिए किसी औज़ार का इस्तेमाल करते हुए देखा गया। फोटो में दिख रहे नर ओरंगुटान ने इस इलाके में मनुष्यों को भाला फेंककर मछली पकड़ते हुए देखा है। मछली पकड़ने के लिए अब यह खुद यही तरीका आज़मा रहा है। नदी में मछली मारने में दिक्कत हुई तो इसने मनुष्यों के जालों में फँसी मछलियों को भाले से मारकर निकाला। ओरंगुटान खाने में औज़ार का इस्तेमाल तो करते हैं। लेकिन पहली बार इसे भाला फेंककर मारने जैसी तकनीक अपनाने की कोशिश करते देखा गया, जिसमें काफी दक्षता की ज़रूरत पड़ती है।

अन्तरिक्ष में बाज़ लैंड हुआ है

चार साल पहले, दिसम्बर 2014 में जापान ने हैयाबूसा2 (जापानी में बाज़) नामक एक जहाज़ अन्तरिक्ष में भेजा। कुछ ही दिन पहले यह पृथ्वी से 30 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर रियूगू (एक लोककथा में जापानी ड्रैगन का महल) नामक क्षुद्रग्रह (asteroid) पर उतरा। जापान की अन्तरिक्ष शोध संस्था जैक्सा इस बात से बहुत उत्सुक है कि पहली बार किसी क्षुद्रग्रह की ज़मीन को खोदकर प्राचीन मिट्टी पृथ्वी पर वापस लाई जाएगी। इससे हमें पता चल सकता है कि 460 करोड़ साल पहले कायनात कैसी थी। हायाबूसा2 अगले साल तक पृथ्वी पर वापस आ जाएगा। और ये सब एक फ्रिज जितनी बड़ी मशीन का कमाल होगा।

हीलियम भरे गुब्बारे खतरे में

पृथ्वी पर हीलियम गैस की मात्रा बहुत कम हो गई है। तुम पूछ सकते हो कि इसमें चिन्ता वाली क्या बात है। गुब्बारों में ही तो भरते हैं इसे। लेकिन ऐसा नहीं है। हीलियम हवाईजहाज़ और एम.आर.आई जैसी कई महत्वपूर्ण मशीनों में इस्तेमाल होती है। तरल हीलियम चीज़ों को ठण्डा रखने में उपयोगी है - भौतिकी शोध में इसका काफी उपयोग होता है। आज के लगभग सारे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के बनाने में इसकी भूमिका रहती है। दिक्कत यह है कि हीलियम हमें नैचुरल गैस की खदानों और यूरेनियम व थोरियम के रेडियोएक्टिव क्षय (decay) से मिलती है। इसे कैद करके न रखें तो यह उड़ जाती है और इतना हलकी होती है कि पृथ्वी के वायुमण्डल से भी ऊँची निकल जाती है। हीलियम कायनात में सबसे ज़्यादा मात्रा में पाए जाने वाले तत्वों में से है, लेकिन यह हमारे हाथ मुश्किल से ही लगती है।

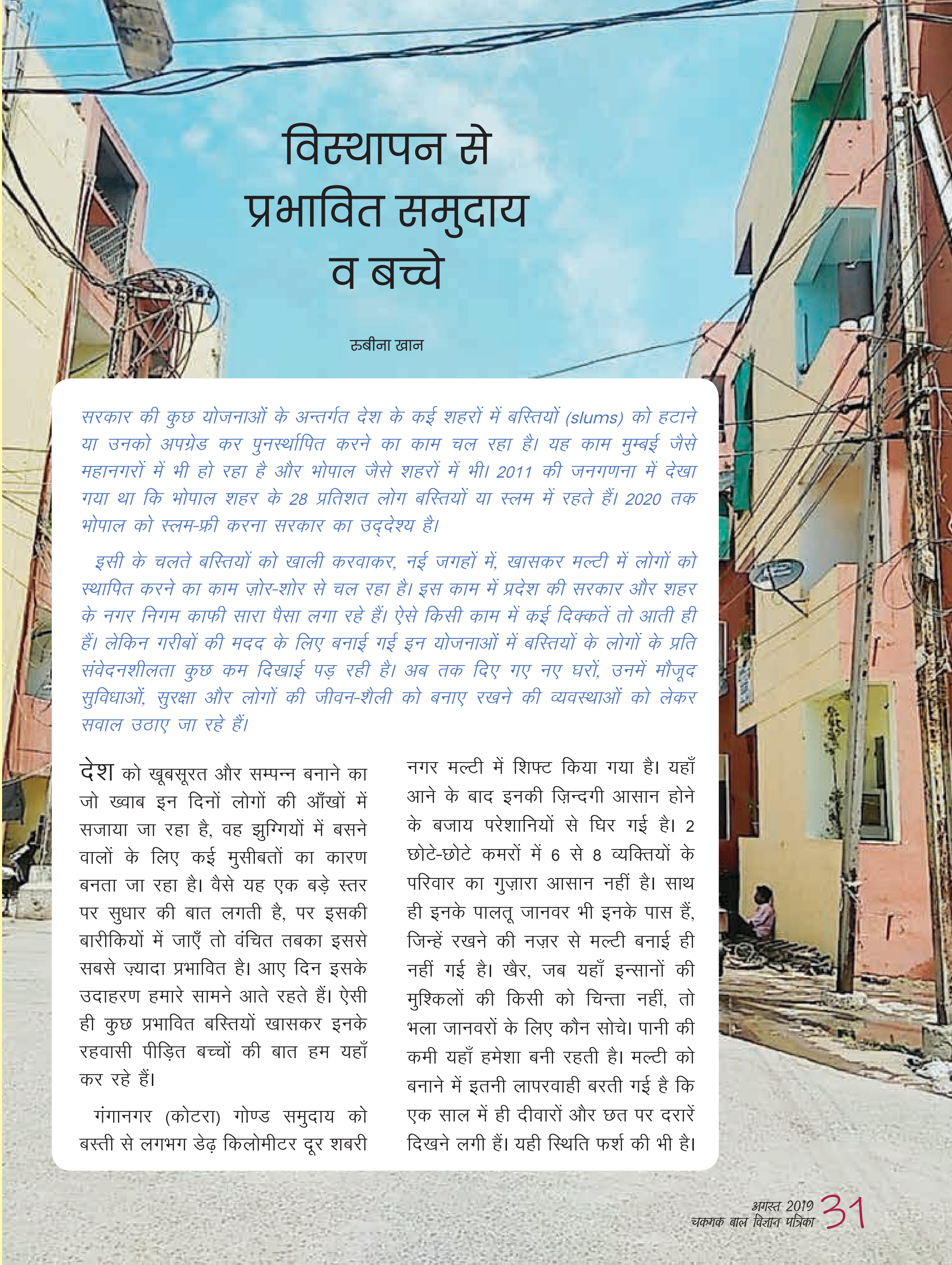

विस्थापन से प्रभावित समुदाय व बच्चे

रुबीना खान

सरकार की कुछ योजनाओं के अन्तर्गत देश के कई शहरों में बस्तियों (slums) को हटाने या उनको अपग्रेड कर पुनर्स्थापित करने का काम चल रहा है। यह काम मुम्बई जैसे महानगरों में भी हो रहा है और भोपाल जैसे शहरों में भी। 2011 की जनगणना में देखा गया था कि भोपाल शहर के 28 प्रतिशत लोग बस्तियों या स्लम में रहते हैं। 2020 तक भोपाल को स्लम-फ्री करना सरकार का उद्देश्य है।

इसी के चलते बस्तियों को खाली करवाकर, नई जगहों में, खासकर मल्टी में लोगों को स्थापित करने का काम ज़ोर-शोर से चल रहा है। इस काम में प्रदेश की सरकार और शहर के नगर निगम काफी सारा पैसा लगा रहे हैं। ऐसे किसी काम में कई दिक्कतें तो आती ही हैं। लेकिन गरीबों की मदद के लिए बनाई गई इन योजनाओं में बस्तियों के लोगों के प्रति संवेदनशीलता कुछ कम दिखाई पड़ रही है। अब तक दिए गए नए घरों, उनमें मौजूद सुविधाओं, सुरक्षा और लोगों की जीवन-शैली को बनाए रखने की व्यवस्थाओं को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं।

देश को खूबसूरत और सम्पन्न बनाने का जो ख्वाब इन दिनों लोगों की आँखों में सजाया जा रहा है, वह झुग्गियों में बसने वालों के लिए कई मुसीबतों का कारण बनता जा रहा है। वैसे यह एक बड़े स्तर पर सुधार की बात लगती है, पर इसकी बारीकियों में जाएँ तो वंचित तबका इससे सबसे ज़्यादा प्रभावित है। आए दिन इसके उदाहरण हमारे सामने आते रहते हैं। ऐसी ही कुछ प्रभावित बस्तियों खासकर इनके रहवासी पीड़ित बच्चों की बात हम यहाँ कर रहे हैं।

गंगानगर (कोटरा) गोण्ड समुदाय को बस्ती से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर शबरी नगर मल्टी में शिफ्ट किया गया है। यहाँ आने के बाद इनकी ज़िन्दगी आसान होने के बजाय परेशानियों से घिर गई है। 2 छोटे-छोटे कमरों में 6 से 8 व्यक्तियों के परिवार का गुज़ारा आसान नहीं है। साथ ही इनके पालतू जानवर भी इनके पास हैं, जिन्हें रखने की नज़र से मल्टी बनाई ही नहीं गई है। खैर, जब यहाँ इन्सानों की मुश्किलों की किसी को चिन्ता नहीं, तो भला जानवरों के लिए कौन सोचे। पानी की कमी यहाँ हमेशा बनी रहती है। मल्टी को बनाने में इतनी लापरवाही बरती गई है कि एक साल में ही दीवारों और छत पर दरारें दिखने लगी हैं। यही स्थिति फर्श की भी है।

बच्चों की एक खास ज़रूरत है 'खेलना'। यहाँ उनके खेलने के लिए जगह बनाई ही नहीं गई है। बच्चे या तो सड़क के किनारे खेलते हैं, या फिर मल्टी के पिछले हिस्से से गुज़रते कलियासोत तालाब के आसपास। तालाब के आसपास की जगह किस हद तक जोखिम भरी है इसका अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। यह किसी बड़े हादसे के होने की ओर संकेत करता है। इसे हादसा कहना भी गलत ही होगा क्योंकि कुछ घटनाओं का अन्दाज़ा तो हमें पहले से भी हो जाता है। तालाब के पास ना तो बाउण्ड्रीवॉल है, ना चेतावनी बोर्ड और ना ही कोई गार्ड तैनात है। बस्ती के पास से गुज़र रही सड़क पर बहुत ज़्यादा ट्रैफिक होने के बावजूद कोई स्पीड ब्रेकर नहीं है। यह सब सुरक्षा के प्रति लापरवाही को दर्शाते हैं। मल्टी के पास से एक बड़ा नाला गुज़रता है, जो अपने आप में खतरनाक है। इन सब में बदलाव महज़ ख्वाब की तरह लगता है। इस पर विचार किया जाए वही बड़ी बात होगी।

आराधना, वैशाली, अम्बेडकर नगर जैसी जगहों के 211 परिवारों को आई. आई. एफ. एम. के सामने माण्डवा (भदभदा) से पहले पड़ने वाली एक जगह पर शिफ्ट किया गया है। पता नहीं क्या सोचकर लोगों को उनके पक्के मकान से निकालकर टीन से बने एक कमरे के घर में बसाया गया है। '2018 से 2022 तक यहीं रहना है' ऐसा बोलकर इन्हें यहाँ लाया गया है।

पूरी तरह टीन से बने इन घरों में रसोई, शौचालय जैसी कोई सुविधा नहीं है। परिवार कितना भी बड़ा हो, सभी के लिए केवल एक ही कमरे की व्यवस्था की गई है। सभी घर आपस में जुड़े हुए एक कतार में बने हैं। बिजली के तार खुले छोड़ दिए गए हैं। बारिश के समय इन घरों में करंट आना शुरू हो गया था। गर्मी में यह पूरी तरह से तप जाते हैं और घर के अन्दर बैठना भी मुश्किल हो जाता है। नालियाँ नहीं होने के कारण सड़क पर पानी फैला रहता है। इसी जगह पर बच्चे खेलते हैं। नहाने के लिए सभी को घर के अन्दर या सामने की कोई जगह इस्तेमाल करनी होती है। महिलाएँ बताती हैं कि जब घर में मेहमान आ जाएँ या परिवार के सभी लोग घर पर हों तो बिना नहाए ही रहना पड़ता है। घर के सामने नहाने पर कई बार आते-जाते मोहल्ले के लोग देखते हैं, यह बहुत ही शर्मिन्दा करने वाला होता है।

शौचालय की व्यवस्था बस्ती से 100 मीटर की दूरी पर की गई है। यहाँ 3 परिवारों पर एक शौचालय दिया गया है। सुबह के वक्त सभी को काम पर या स्कूल जाना होता है, तब एक लम्बा वक्त सिर्फ शौचालय जाने के इन्तज़ार में गुज़र जाता है। सफाई

और पानी की किल्लत तो रहती ही है। साथ ही बिजली की सुविधा का भी अभाव है। कच्ची ज़मीन होने से कीड़ों का डर भी बना रहता है। रात के वक्त अँधेरा होने के कारण बच्चे शौचालय नहीं जाते। कुछ बच्चों ने दूरी व सफाई को देखते हुए पानी कम पीना, शौच के लिए खुले में जाना या फिर देर तक शौच को रोके रखना जैसे तरीके अपना लिए हैं। सुनने में यह बात अजीब लगती है, लेकिन इसके कारण बच्चों में स्वास्थ्य से जुड़ी मुश्किलें हो रही हैं।

संजय नगर बस्ती एम.पी. नगर में डी. बी. मॉल की जगह हुआ करती थी। इस बस्ती को बच्चों की परीक्षा के समय विस्थापित किया जा रहा था। इन लोगों ने कई बार कहा 'कि परीक्षा के बाद यहाँ से चले जाएँगे' फिर भी इन्हें गेंहू खेड़ा और उसके आसपास की जगहों पर विस्थापित कर दिया गया। यह जगह शहर से काफी दूर है। मूलभूत सुविधाओं का अभाव तो यहाँ है ही, साथ ही यातायात के साधन भी मिलना मुश्किल है। जिनके पास निजी वाहन हैं वह कहीं आना-जाना कर पाते हैं। जिनके पास नहीं है, उन्हें 2 से 3 किलोमीटर बाहर आकर बस या ऑटो की सुविधा मिल पाती है। रहवासी बताते हैं कि यहाँ रहते हुए काम मिलना बड़ी समस्या का विषय बन गया है। अगर कहीं काम मिल भी जाए तो रोज़ाना आने-जाने के किराये में ही अधिकांश पैसा चला जाता है। घर के लिए थोड़ा ही पैसा बच पाता है। साथ ही समय भी ज़्यादा जाता है। स्कूल की दूरी बस्ती से इतनी ज़्यादा है कि दूसरे गाँव जाकर ही बच्चे पढ़ाई कर पाते हैं। इस वजह से कई बच्चों का स्कूल भी छूट गया है।

सुभाष नगर के पास बसी बस्ती से 250 परिवारों को मण्डीदीप स्थित झाजरिया नाम की जगह पर विस्थापित किया गया है। यहाँ इन्हें रहने के लिए केवल ज़मीन दी गई है। घर बनाने का भार इन्हें स्वयं ही उठाना है। यहाँ दोबारा अपनी ज़िन्दगी बसाने में लगने वाले वक्त का अन्दाज़ा भी नहीं लगाया जा सकता। बाकी क्या परेशानियाँ इन्हें यहाँ रहते होने वाली हैं, उनका अनुमान पिछली बस्तियों की स्थिति जानकर लगाया जा सकता है।

यहाँ महज़ कुछ ही बस्तियों की बात की गई है। यदि इस समस्या से प्रभावित अन्य बस्तियों को भी इसमें शामिल किया जाए तो मुश्किलों का ग्राफ बढ़ता हुआ ही नज़र आएगा। इस तरह की जगहों को बसाने में वहाँ रहने वाले लोगों की कई सालों की मेहनत होती है। इन्होंने जंगलों, पहाड़ियों पर काम करके इन जगहों को रहने लायक बस्तियों में तब्दील किया है। यह लोग अपने लिए सुविधाएँ खुद तैयार करते हैं। इनमें से ज़्यादातर लोग काम की तलाश में गाँव से शहर आते हैं। इतनी मेहनत और समय लगाने के बाद इन्हें किसी ऐसी जगह भेज दिया जाता है, जहाँ अकसर इन्हें दोबारा यही सब मेहनत करनी पड़ती है। लोगों को विस्थापित करना ही है तो उनकी ज़रूरतों के आधार पर मूलभूत सुविधाओं को ध्यान में रखना चाहिए। नई जगह को इस तरह तैयार करना चाहिए कि वहाँ जाकर लोग बस पाएँ, ना कि पीड़ित हो जाएँ।

जिस तेज़ी से देश का विकास हो रहा है, इसमें कई ऐसे लोग पीछे छूटते जा रहे हैं जो इसके हकदार हैं। विकास के नाम पर निम्न वर्ग के लोगों की मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं; कहीं कामों की, कहीं घरों की, कहीं दस्तावेजों की, तो कहीं अपनों को खोने की।

मेरा पन्ना

नन्हीं बूँदें

श्रेया कुमारी, किलकारी बाल भवन, पटना, बिहार

जब भी बारिश होती है
बैठ जाती हूँ खिड़की के पास
बारिश की ये नन्हीं बूंदें
छूती मुझको बड़े प्यार से
कहती हों जैसे चलो मेरे संग
बहना मेरे ही संग
ले चलूँगी तुम्हें अपनी दुनिया में
कभी आसमान पर कभी ज़मीन पर
कभी तारों से टकराना
तो कभी फूलों पर गिर जाना
कहती हों जैसे चलो मेरे संग
दूँगी मैं तुम्हें एक प्यारा-सा रंग
उस रंग से रंगना अपने सपने
दुनिया को भी रंगना रंग अपने
कितनी अच्छी हैं ये बूंदें
जो आती हैं मुझे छूने

चित्र: निशा, प्राकृशाला, नोएडा, उत्तर प्रदेश

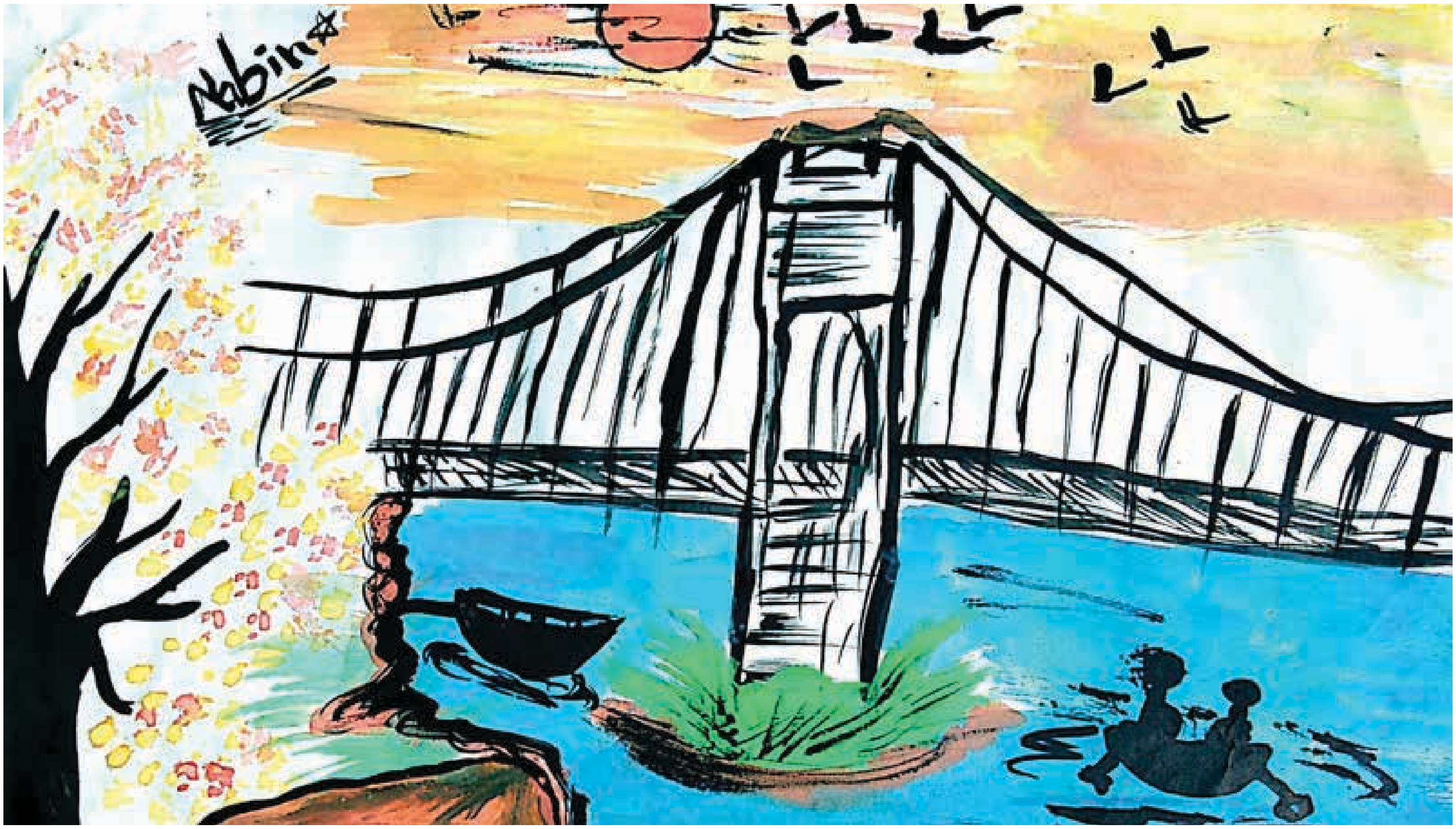

चित्र: नबीन, बालामन्दिर, मकाला जागृति, बेंगलुरु, कर्नाटिका

हम किन से डरते हैं?

हर्षिता माण्डवी, आठवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

हम सब लोग कई चीज़ों से डरते हैं। कई ऐसे जीव होते हैं जो हमें बहुत अच्छे लगते हैं पर उन्हें हम पाल नहीं सकते। कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें हम पालना नहीं चाहते तब भी वे हमारे घर में रहते हैं। अब हम उन्हें कैसे बाहर निकाल सकते हैं। वैसे तो हर चीज़ की दवाई आती है। हमने बहुत-सी चीज़ें डालीं पर उनसे कुछ भी नहीं हुआ। हमें बहुत-सी चीज़ें बाहर निकालनी है, जैसे - चींटी, चूहे, मकड़ी, छिपकली, साँप, केंचुएँ, बिच्छू, कनखजूरा, कॉकरोच, मधुमक्खी, बर्र, मच्छर, मेंढक। हम इन्हें क्यों बाहर निकालना चाहते हैं? चींटी को इसलिए कि वह बहुत छोटी होती है। अगर हम बैठे रहते हैं तो हमें काट लेती है। इसलिए हमें चींटी खराब लगती है। चूहे हमारे घर का खाना खा जाते हैं और हमें काट भी लेते है। इसीलिए हमे चूहे भी अच्छे नहीं लगते। मकड़ी हमको काट लेती है। अगर छिपकली हमारे ऊपर गिर जाती है तो हमें अच्छा नहीं लगता, डर लगता है। कॉकरोच गन्दगी फैलाते हैं इसीलिए हमें अच्छे नहीं लगते। हम इन्हें मारना नहीं चाहते पर हमे इन्हें मारना पड़ता है क्योंकि यह हमें नुकसान पहुँचा सकते हैं।

अब जिन्हें हम जोड़ना चाहते हैं, वह हैं - चिड़िया, तोते, तितली, गिलहरी। चिड़िया को हम हमारे बगीचे में दाने डालकर बुला सकते हैं। हम रोज़ सुबह उठकर चावल रखें तो तोते चावल खाकर हमारे घर का हिस्सा बन सकते हैं। तितली हमें इसीलिए अच्छी लगती है क्योंकि जब भी मैं अपने हाथ फैलाती हूँ तो वो मेरे हाथ पर आकर बैठ जाती है। गिलहरी इसीलिए अच्छी लगती है क्योंकि हमारे घर के आसपास घूमती रहती है और हमारे घर का हिस्सा बन चुकी है।

मेरा पन्ना

धुआँधार बारिश

राजीव बाघमारे, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

सुबह 6 बजे मैं सो रहा था। तब मेरे मामा उठे। उसने मुझे जगाया और कहा कि खिड़की से देख कितनी बारिश हो रही है। मैंने देखा हमारे इधर नाली कितना बह रही है। हमारे मकान के सामने बहुत पानी बह रहा था। मैंने सोचा अच्छा है कि हमारा घर नीचे नहीं मिला। पर हमारा छत ऊपर से बहुत गीला हो गया था। उस दिन से मेरी तबीयत खराब हो गई थी। एक-दो दिन मैं स्कूल नहीं जा पाया। हमारे तालाब का पानी नाले से बह रहा था। तालाब की दीवार तो टूट ही गई थी। और नाले में तालाब की मछलियाँ आ गई थीं। हमारे इधर के लोग इतनी बारिश में मछली पकड़ रहे थे। हमारे इधर के ब्लॉक नम्बर 7 व 8 में पूरा पानी भरा था। जिनको चौथी मंज़िल में मकान मिला है उनके घर में पानी नहीं आ पाया क्योंकि उनका घर तो ऊपर है।

छोटा बच्चा

नील, दस वर्ष, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाई माधोपुर, राजस्थान

डफली बजा रहा, छोटा बच्चा रेल में

नाच दिखाकर लुभा रहा, छोटा बच्चा रेल में

झाड़ू लगा रहा, छोटा बच्चा रेल में

गाना गा रहा, छोटा बच्चा रेल में

सबसे पैसे माँग रहा, छोटा बच्चा रेल में

चित्र: फारिक आज़िम, दिल्ली

क्यों और कैसे

रूपल पतोले, सातवीं, कमला निम्बकर
बाल भवन, फलटण, महाराष्ट्र

इन्द्रधनुष निकलता क्यों
फूल इतना शर्माते क्यों
रात में तारे, क्यों टिमटिमाते
खेलते हैं, या हैं लड़ते
भोर में पंछी क्यों हैं गाते
दिन में कहाँ चले हैं जाते
रोज़ सूरज क्यों है उगता
मिट्‌टी में बीज कैसे पौधा बनता
पंछी अपना घोंसला कैसे ढूँढता
सूरज पश्चिम में क्यों है डूबता

चित्र: अथर्व गुप्ता, मोटिवेशन-द लर्निंग सेंटर, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मेमना की होली

एक थी गुड़डी नन्हीं-मुन्नी, प्यारी-प्यारी, भोली-भाली। उसके घर में एक बकरी पली थी। बकरी का एक बच्चा था। गुड़डी ने उसका नाम 'मेमना' रखा था। मेमना अपने नाम के जैसे ही में-में करता रहता था। वह बहुत शरारती था। हर समय उछल-कूद करता रहता था। हरे-हरे पौधे देखकर उसके मुँह में पानी आ जाता था।

होली आने वाली थी। इसलिए गुड़डी ने एक दिन पहले ही गुब्बारों में रंग भरकर रख लिया था। ढेर सारे गुब्बारों में रंग भरकर उन्हें कपड़े के थैले में रखकर उसने आँगन में रखे चारे के पीछे छुपा दिया और खेलने चली गई। तभी हरी-हरी घास देखकर मेमना वहाँ आ गया। वह घास पर उछल-कूद करने लगा। तभी गुब्बारे एक साथ फूटकर रंग के फव्वारे से मेमने के सुन्दर शरीर को रंगने लगे। बेचारा मेमना ठण्डे-ठण्डे पानी में भीगकर काँपने लगा। मेमना के उतावलेपन ने उसे मुश्किल में डाल दिया। जब गुड़डी वापस आई तो उसने फूटे गुब्बारे तथा मेमना का शरीर देखा। उसकी हालत देखकर वह हँसने लगी। उसने मेमना को अपनी गोद में उठाकर पुचकारा और बोली, मेमना गुड्डे, मुझे पता होता कि तुम्हें रंग इतने पसन्द हैं, तो तुम्हें मैं हमेशा रंगकर रखती।

शीतल कुमारी, दसवीं, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सिसैया, खटीमा, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

चित्र: ऋषितोनोय दत्ता

चींटियाँ कॉकरोच की दावत के लिए उतावली हैं। कौन-से रास्ते पर चलकर ये कॉकरोच तक पहुँच पाएँगी?

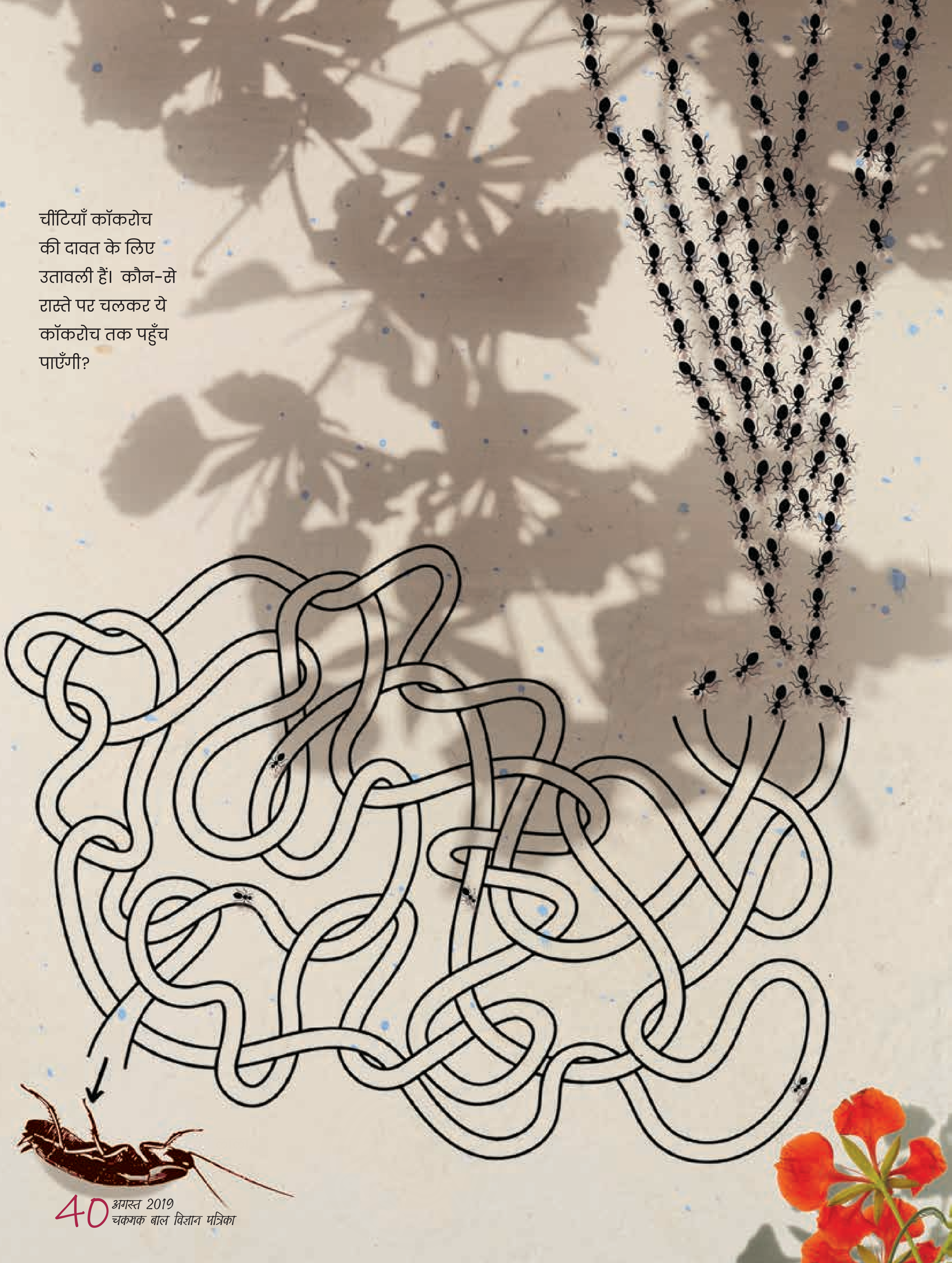

माथापच्ची

1. इस ट्रैफिक जाम को हटाने के सबसे आसान तरीके के लिए केवल एक ही कार को आगे-पीछे करना होगा। तुम किस कार को आगे-पीछे करोगे?

2. हिना का कहना है कि वो किसी भी फुटबॉल मैच के शुरू होने से पहले उसका स्कोर बता सकती है। उसके पास कोई चमत्कारी शक्ति नहीं है। फिर वो ऐसा कैसे कर सकती है?

3. दिए गए चित्र में से माचिस की 3 तीलियाँ इस तरह हटाओ कि तुम्हारे पास केवल 3 चौकोर बचें। सिर्फ 2 तीलियाँ हटाकर भी ऐसा कर सकते हैं। कैसे करोगे?

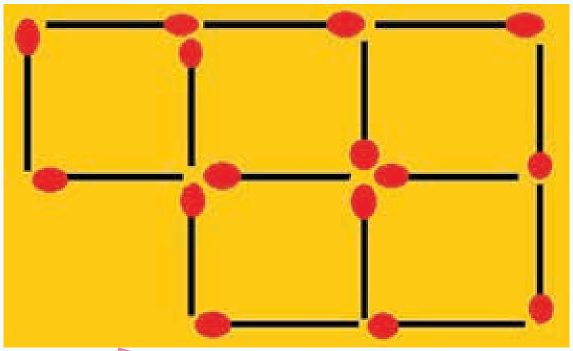

4. कौन-सा बैग है जो केवल भीगने पर ही काम आता है?

5. एक कच्चे अण्डे को फर्श पर कैसे छोड़ें कि वो टूटे नहीं?

6. एक कुएँ में 5 मेंढक थे। एक मर गया तो कुएँ में कितने मेंढक बचे?

7. मुर्गी अण्डा देती है, गाय दूध देती है। पर, ऐसा कौन है जो अण्डा और दूध दोनों देता है?

फटाफट बताओ -

सीधी होकर है वह बहती
उल्टी होकर वाह-वाह कहती
(फ़िछ)

एक पैर है काली धोती
जाड़े में वह हरदम सोती
गरमी में है छाया देती
बारिश में वह हरदम रोती
(ाफ़्इ)

आपस की उलझन सुलझाकर
अलग-अलग जो बाँटती
दाँत हैं उसके फिर भी वह
कभी नहीं है काटती
(ीउकं)

	6	7			9	2		
1	2				7	6	3	9
		4	5	2				8
		9			2	5		
5	7		1	6			2	4
6				9				7
		1	9	7				6
7	8	3			1	4	9	
9					4		7	1

सुडोकू-22

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

माथापच्ची जवाब

1. यदि तुम सबसे पहले 3 नम्बर की कार को पीछे करो तो बाकी की गाड़ियाँ आसानी से निकल जाएँगी।

2. शुरू होने से पहले किसी भी मैच का स्कोर शून्य ही होता है। इसलिए हिना ने कहा कि वो किसी भी मैच के शुरू होने से पहले उसका स्कोर बता सकती है।

3.

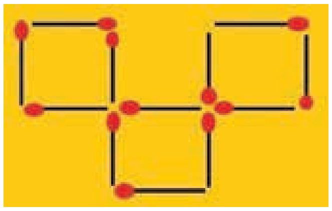

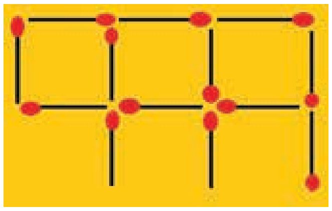

4. टी-बैग

5. चाहे जैसे छोड़ो, कच्चे अण्डे को फर्श पर छोड़ने से फर्श नहीं टूटने वाला।

6. 5, क्योंकि मरा हुआ मेंढक भी कुएँ में ही था।

7. दुकानदार

भूलभुलैया का जवाब

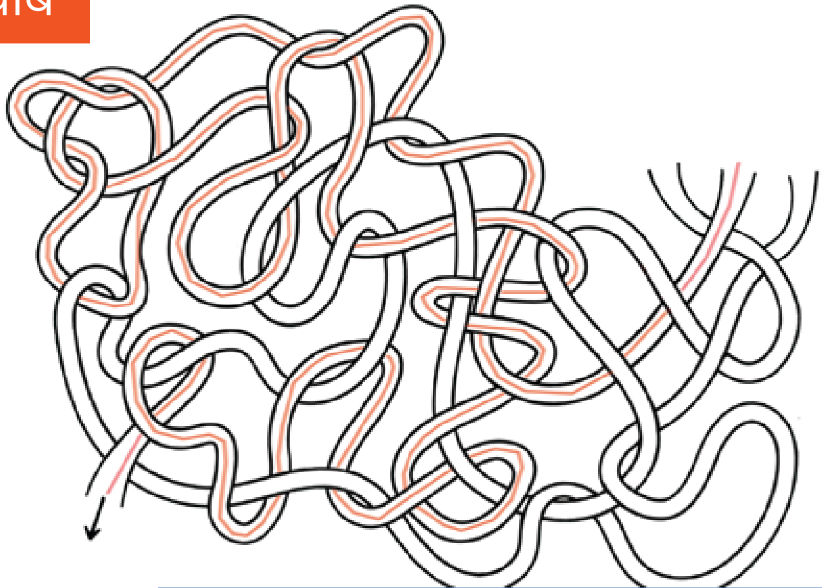

गणित है मज़ेदार: उत्तर

1. $55 = 2^5 + 2^4 + 2^2 + 2^1 + 2^0$
   $= 32 + 16 + 4 + 2 + 1$
   $55 = 3^4 - 3^3 + 3^0$
   $= 81 - 27 + 1$
2. $78 = 2^6 + 2^3 + 2^2 + 2^1$
   $= 64 + 8 + 4 + 2$
   $78 = 3^4 - 3^1$
   $= 81 - 3$

भूलसुधार: गणित है मज़ेदार में पिछली बार पाँच क्रम दिए थे जिन्हें तुम्हें पूरा करना था। उनमें से चौथे क्रम का जवाब 22 नहीं 33 होगा।

जुलाई की चित्र पहेली का जवाब

	बैं1	च2		फि3	स	ल	प4	ट्टी
नी5		क6	ता	र			ट	
म7	क8	ई		की		जि9	रा	फ10
	न्दी		द11		ग12			व्वा
गि13	ल	ह	री		म14	म	ब15	रा
टा				झू16	ला		गी	
र17	स्सी	कू18	द19			म20	चा	न21
		प22	र	दा		श		म
	कु23	न	बा		पि24	क	नि	क

सुडोकु-21 का जवाब

6	4	1	2	7	5	8	3	9
3	5	9	8	1	6	7	2	4
7	8	2	3	9	4	5	1	6
8	9	6	4	2	3	1	5	7
4	1	7	5	8	9	3	6	2
2	3	5	7	6	1	4	9	8
5	2	4	6	3	7	9	8	1
9	6	3	1	4	8	2	7	5
1	7	8	9	5	2	6	4	3

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

1	2	■	3		■	4		5
■	6			■	7	■	■	
■		■	8	9		10	■	
11		12	■		■	13	14	
	■	15	16		■	■		■
	■	■		■	17			■
■	18	19		■		■	■	20
21	■		■	22		23	■	
24			■		■	25		

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

चित्र: सुमुखी, पाँचवीं, अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म. प्र.
से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोबिन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन